सर्जना

सृजनात्मक अभिव्यक्ति की प्रतिनिधि पत्रिका

शासकीय डॉ. वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग

नैक से 'बी' (2.90) ग्रेड की अधिमान्यता प्राप्त महाविद्यालय

स्मृति शेष

केदार नाथ सिंह

7 जुलाई 1934- 19मार्च 2018

अबकी बार लौटा तो बृहत्तर लौटूंगा
चेहरे पर लगाए नोकदार मूँछे नहीं
कमर में बाँधे लोहे की पूँछ नहीं
जगह दूँगा साथ चल रहे लोगों को
तरेर कर न देखूँगा उन्हें,
भूरी शेर-आँखों से
अबकी बार लौटा तो,
मनुष्यतर लौटूँगा
घर से निकलते, सड़कों पर चलते
बसों पर चढ़ते, ट्रेन पकड़ते
जगह बेजगह कुचला पड़ा ।
पिद्दी-सा जानवर नहीं
अगर बचा रहा तो कृतज्ञतर लौटूँगा अबकी बार
लौटा तो हताहत नहीं
सबके हिताहित को सोचता पूर्णतर लौटूँगा।

कुँवर नारायण

19 सितम्बर 1927-15 नवम्बर 2017

मुझे विश्वास है
यह पृथ्वी रहेगी
यदि और कहीं नहीं तो मेरी हड्डियों में
यह रहेगी जैसे पेड़ के तने में
रहते हैं दीमक
जैसे दाने में रह लेता है घुन
यह रहेगी प्रलय के बाद भी मेरे अन्दर
यदि और कहीं नहीं तो मेरी जबान
और मेरी नश्वरता में
यह रहेगी

और एक सुबह मैं उठूंगा
मैं उठूंगा पृथ्वी-समेत
जल और कच्छप-समेत मैं उठूंगा
मैं उठूंगा और चल दूंगा उससे मिलने
जिससे वादा है
कि मिलूंगा।

सर्जना

संरक्षक एवं प्राचार्य

प्रो. सुशीलचंद्र तिवारी

संपादक मंडल

संपादन

डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी

कला संयोजन

डॉ. ऋचा ठाकुर

डॉ. योगेन्द्र त्रिपाठी

अनुसंधान

डॉ. निसरीन हुसैन

अनुक्रम

अपनी बात - डॉ.सुशीलचन्द्र तिवारी (प्राचार्य)

सम्पादकीय

1. सर्जना के विविध आयाम 5-21

- अमूर्तन का सौन्दर्य बोध - योगेन्द्र त्रिपाठी
- Herbs as Natural Healers. - Dr. Nisreen Husain
- जीएसटी से स्वरोजगार की संभावनाएं - डॉ. शशि कश्यप
- नृत्यकला और मूर्तिकला का अंतर्संबंध - प्रो. ऋचा ठाकुर
- Emotional Intelligence : An Indian perebective - Dr. Tripati Bala
- Challenges and opportunities of e-commerce in India - Dr. K.L. Rathi
- हिन्दी का स्वाभिमान - डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी
- प्राचीन भारत की मुद्रा व्यवस्था - शबीना बेगम

2. सर्जना के क्षण 22-23

- निर्भया
- बेटियाँ
- अनहद

3. सर्जना की अभिव्यक्ति 24-36

- प्रो. माण्डवी सिंह से बातचीत
- छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया
- अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी

4. सर्जना के अभिप्रेरण 37

- ईमानदारी एवं सच्चाई - प्रो. डी.सी. अग्रवाल

5. सर्जना की परिलब्धियाँ 38-40

- आदि रंग कार्यशाला
- आई.क्यू.ए.सी. प्रतिवेदन

--o--

सर्जना

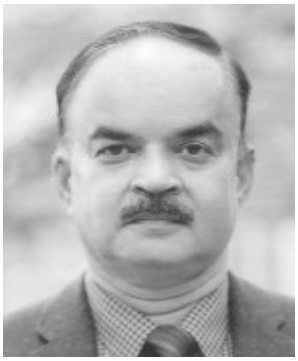

अपनी बात

शोध, अनुसंधान और लेखन के माध्यम से ज्ञान का प्रत्येक कोना पुष्पित और पल्लवित होता है । शिक्षा के क्षेत्र में यह विशेष महत्व रखता है और यही वह माध्यम है, जिससे ज्ञान के हर क्षेत्र में निरन्तर प्रगति और विकास की प्रक्रिया चलती रहती है ।

हमारा यह कन्या महाविद्यालय क्रमशः प्रगति के अनेक सोपानों को पारकर इस गौरवशाली स्थान पर पहुँचा है । न केवल विज्ञान, वाणिज्य, कला जैसे मूल विषय अपितु प्रदर्शनात्मक कलाओं में भी इसने उच्चस्तरीय छाप छोड़ी है । हमारा निरन्तर प्रयास रहता है कि प्राध्यापकों में शोध अनुसंधान की अभिवृद्धि एवं छात्राओं में रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा मिले । उनके मानसिक क्षितिज का निरन्तर विकास हो ।

इसी प्रवृत्ति को समृद्धि की ओर ले जाने का एक लघु-प्रयास 'सर्जना' के माध्यम से किया जा रहा है । जिसमें छात्राओं और प्राध्यापकों के मूल आलेखों का संयोजन है । इस अभिनव प्रयास के लिए संपादक मंडल ने अथक मेहनत की है । छात्राओं के मौलिक विचारों तथा शिक्षकों की शोधपरक लेखनी ने हमारी 'सर्जना' को मूर्तरूप देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है ।

प्रवेशांक में यदि कोई कमी तथा कसर रह जाती है तो निश्चित रूप से हमारा प्रयास और भी बेहतर बनाने का होगा । संपादक मंडल, रचनाकार, मुद्रक का हृदय से आभार जिनके प्रयासों से हम सफल हो सके ।

शुभकामनाओं सहित.....

S.2

डॉ.सुशीलचन्द्र तिवारी
प्राचार्य

संपादकीय

सृष्टि के आरम्भ से सर्जनात्मकता ही मानव सभ्यता के विकास का आधार रही है । सर्जना प्रकृति का मूलाधार है और प्रकृति की अब तक की सबसे अनमोल रचना मनुष्य ही है । अतः प्रकृति की सर्जनात्मकता मनुष्य के प्रकृति में भी अनुस्युत है। कला, संगीत साहित्य, ज्ञान-विज्ञान आदि विविध क्षेत्रों में मानवों ने अपनी सृजनात्मकता से अभूतपूर्व प्रगति की है। महाविद्यालयीन शोध पत्रिका सर्जना भी महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं छात्राओं की सृजनात्मकता को अभिव्यक्ति प्रदान करने की एक अभिनव पहल है । इसके माध्यम से कला, वाणिज्य, विज्ञान, गृहविज्ञान एवं नृत्य, संगीत तथा चित्रकला आदि विविध अनुशासनों के शोधपरक आलेख, हृदय के भावोदगार, प्रेरक प्रसंग तथा महाविद्यालयीन उपलब्धियों को उजागर कर अध्येताओं के सृजनात्मकता को अभिप्रेरित करना है ।

पत्रिका को मुख्य रूप से पाँच उपशीर्षकों में विभाजित किया गया है । **सर्जना के विविध आयाम** में वनस्पति, मानवीय संवेगों, कला के अन्तर्सबंधों, अमूर्त सौन्दर्य, जीएसटी एवं हिन्दी का स्वाभिमान संबंधी शोधपत्रों को शामिल किया गया है । **सर्जना के क्षण** में हृदय के सहज भावोदगार, कविता को स्थान दिया गया है । जो सर्जना की सर्वाधिक कोमल अभिव्यक्ति है। **सर्जना की अभिव्यक्ति** के माध्यम से ज्ञान के सामाजिक आयाम को अभिव्यक्त किया गया है । इस उपशीर्षक में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की कुलपति प्रो. माण्डवी सिंह का दीर्घ साक्षात्कार तथा छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया और अबला जीवन पर छात्राओं के अनुभवों को संचित किया गया है । अभिप्रेरणा शैक्षिक संस्था की प्राणवायु है । इसी पहलू को केन्द्र में रखकर **सर्जना के अभिप्रेरण** उपशीर्षक में प्रेरणादायी लेख को शामिल किया गया है । महाविद्यालय ज्ञान के साथ ही विविध शिक्षणेत्तर गतिविधियों का केन्द्र होता है । विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु ये गतिविधियाँ अत्यन्त आवश्यक होती है । **सर्जना की परलब्धियाँ** के अंतर्गत आदिरंग, माटीशिल्प एवं पेपर मैशे की कार्यशाला के साथ-साथ समय-समय पर आयोजित होने वाले विविध महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ संजोई गई है ।

सर्जना के स्वरूप ग्रहण करने के पीछे हमारे प्राचार्य डॉ. एस.सी. तिवारी की मुख्य भूमिका रही है । विद्यार्थियों की रचनात्मकता, अभिव्यक्ति क्षमता एवं प्रतिभा विकास हेतु प्राचार्य सतत् शैक्षणिक नवोन्मेष पर बल देते रहते हैं । उनकी दूरदर्शिता, विकासात्मक दृष्टिकोण एवं सहज व्यवहारिक समझ से ही 'सर्जना' विचार-विमर्श एवं रचनात्मकता की प्रतिनधि पत्रिका बन सकी है ।

---o---

सर्जना के विविध आयाम

अमूर्तन का सौन्दर्य बोध

(योगेन्द्र त्रिपाठी)
सहा. प्रा. चित्रकला

शब्दकोश की परिभाषा के मुताबिक एक शब्द अमूर्त चित्र वह है कि जो प्राकृतिक जीवन से पूरी तरह से स्वतंत्र है, भले ही उसकी जड़े प्रकृति में हो। इस तरह की कलाकृति को एक स्वतंत्र 'वस्तु' समझा जाता है जिसमें किसी विषय को खोजना व्यर्थ होता है। रंगों -रूपकारों का संयोजन कुछ इसी तरह का सुख देता है जैसे संगीत सुनने में श्रोता को मिलता है।'' अमूर्तता मूर्त की चरम अभिव्यक्ति है। अतः अमूर्त को जानने के लिए दृश्यचित्र को समझना जरूरी है।

आम तौर पर दृश्य कला शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के लिए विषय भर है जिसमें उन्हें कॉलेज से बाहर जाने को मिलता और आस-पास के गाँव, नदी, तालाब आदि समेटे भू-दृश्य का चित्रण माना जाता रहा है। अगर साथ गए शिक्षक समझदार और ज्ञानी है, तब विद्यार्थियों को दृश्य चित्रण के रास्ते चित्रकला की बारीकियां समझाने को मिलती है जिन्हें वह आगे चलकर एक चित्रकार की तरह अपनी चित्रचर्या में शामिल कर लेता है। वहां वह रंग-भेद, रंग निरीक्षण, रंग-संबंध, धूप-छांव, परिप्रेक्ष्य, रंग परिप्रेक्ष्य आदि सीखता है। वह जल रंगों के बारे में पहली बार जान रहा होता है कि मुश्किल माध्यम है। इसी के साथ उसे मालूम होता है चित्र में तात्कालिकता का महत्व अकास्मिकता का अहसास, एकाग्रता का अनुभव और दृश्य की प्रारंभिकता से अंत तक की अक्षुण्णता। वह समझता है रेखाकंन की क्षणभंगुरता और इशारो का महत्व । उसे पहली बार दृश्य का रंग में बदलने का अनुभव होता है। दृश्य और चित्र का भेद उसके सामने खुलता है। उसे दिखता है दृश्य और चित्र के रंग का फर्क देखे और किये का फर्क , अनुभव और प्रमाण का फर्क, मस्ती और गंभीरता का फर्क यह सब उसके सामने घटित होता है। जो विहंगम है, विशाल है, विराट है, वह कैसे एक छोटे से कागज पर समा रहा है। वह अनजाने ही यह भी जान रहा होता है कि दृश्य हमेशा बाहरी है, अनुभव भीतरी है और चित्रण अभ्यास है। वास्तव में वह दृश्य विचत्रण के सहारे अपने को जान रहा होता है। वह जान रहा होता है अभ्यास का सुख अभ्यास से अनुभव तक और अनुभव से चित्रण तक की यात्रा में वह बिला जाने वाला है बस इसका

भर ज्ञान उसे नहीं होता। प्रकृति का प्रभाव उसे प्रभावशाली लगने लगा। वह देखने की शुरूआत करता है। वैन गॉग से लेकर डी जे जोशी तक अनेक चित्रकारों ने जाना कि प्रकृति के प्रभाव में रहना और उससे निकलना खासा मुश्किल काम है। दृश्य चित्रण के अनेक रूप हमारे सामने आये और उन सबसे हम चमत्कृत हुए।

सर्जक ये जानते हुए चित्र बनाता है जो वह बना रहा है वह दृश्य चित्र नहीं है। एक कलाकार माध्यम की तरह अपने को बरतता है और जो बन रहा है वह दृष्य चित्र की तरह उभरना शुरू होता है। यह भी

जानता है कि जो दृश्य पहली बार भी उभर रहा है जो चित्र की तरह जाना जायेगा। दृश्य का लोप हो जाना ही उसके चित्र होने के प्रमाण है। वह किसी रणनीति की तरह रचता है ऐसा भी नहीं है।

कलाकार के चित्रों में दृश्य चित्रण न होना ही उन्हें चित्र संसार में अनूठा बनाता है। इन चित्रों में लक्षण, संकेत और कभी-कभी अवकाश भी दृश्यचित्र की ओर आंखों को ले जाते हैं किन्तु इनकी बनक और मौजूदगी उसे भटका देती है। सर्जक यह बात जानता है कि दर्शक चित्र और दृश्यचित्र का ही है। वह अपने आस-पास को चित्रों में लेने का कोई इरादा भी नहीं रखता।

किन्तु वो अपने आस-पास से अनजान भी नहीं है। वह चित्र को दृश्यचित्र की तरह नहीं बनाकर उस दृश्यचित्र की मर्यादा सुरक्षित रखता है। उसके चित्र का सत्य उन दृश्यों में नहीं है जो उसके आसपास बिखरें हैं बल्कि उस अनुभव में जो इस आसपास में रहने से उपज है। अमूर्तन का संबंध कल्पना से जुड़ा है। यही वो जगह है जहां कलाकार के चित्रों में लक्षण प्रकट होते हैं। इस कल्पना प्रधान कल्पनातीत वह सर्जन अपने देखे हुए को रचे हुए अनुभव में बदलता है और वह चित्र उस न देखे हुए का आभास है जिससे देखा हुआ मान लिया गया। जो अंतस कल्पना के किसी छोर में उजागर है किन्तु यथार्थ में कहीं नहीं है।

जब से मनुष्यों ने कंदराओं में भित्ति चित्र बनाया तभी से आधुनिक कला अमूर्त कला का प्रादुर्भाव हुआ था लेकिन आधुनिक कला के इतिहास में अमूर्त कला के जन्म हेतु 1910 का विशेष महत्व है। जब चार-पांच महत्वपूर्ण कलाकारों ने अमूर्त कला का एक अलग खाना सा बना दिया। विशेषकर कांदिस्की (1866-1944) मोंद्रियान (1872-1944) ने अमूर्त कला को एक कला आंदोलन में बदल दिया।

सत्तर के दशक में अकबर पदमसी ने Metascape बनाये। उनका कहना था ये दृश्य बाहरी नहीं है बल्कि भीतरी है। ये देखा हुआ नहीं सोचा हुआ दृश्य है। आधुनिक भारतीय कला के प्रमुख चितेरों में गायतोण्डे , सैयद हैदर रजा, स्वामीनाथन अम्बादास प्रभाकर कोल्टे, आदि प्रमुख हस्ताक्षर हैं। ये चित्रकार प्रकृति के गूढ़ रहस्यों एवं मानव अंतःस्थल के विविध अनुभूतियों को रंगों में संजोते हैं। पाश्चात्य आधुनिक अमूर्त कलाकारों ने भारतीय तंत्र विद्या से भी बहुत कुछ सीखा है।

दृश्य चित्रण आसान नहीं है। अक्सर दिख रहे दृश्य के चित्रण की नकल को दृश्य चित्रण मान लिया जाता रहा है। इसमें चित्रकार दृश्य चित्रण में अपना देखना पाता है। बंदर की तरह नकल करना उसका उद्देश्य नहीं होगा। ये शुरूआती समय में ही जान जाता है। वह विस्तार ही चित्रकारका देखना है। एक ही दृश्य का चित्रण दो चित्रकार करें तो उनमें जमीन आसमान का फर्क होगा। डी जे जोशी सपाट हरा रंग लगाते तो उसमें गहरी, अथाह जलराशि का अहसास उनके देखने का अंश है जो सहज ही चला आता। ये कोई और चित्रकार नहीं कर पाया। इसी तरह वैन गॉग के चित्रों में मौजूद रेखीय परिप्रेक्ष्य उस स्थूल दृश्य में बहती हवा का अहसास भर देता है। इन दृश्य चित्रों को देखे तो हम जान सकते हैं ये दृश्य चित्र रंग लगाने में, रंग बिछाने में, रंग फैलाने में है। रंग को दूसरे रंग में मिलाने में उसकी नजर बैठी है। यह सब किया-धरा अनूठा और विश्वसनीय लगने लगता। अमूर्तन का शिल्पी यहीं पर अपने चित्र की रचना में दृश्य को बाहर कर उस चित्र का दृश्य बना देता है और हम अविश्वास से उसके चित्र से संबंध बनाते हैं।

अशोक वाजपेयी जी के शब्दों में अमूर्तन में बहुलता है। रंगों की स्पंदित तहें, विचित्र रूपाकर, रंगों के बीच नये रंगो की खोज, रंगों के अनगिन स्मरण और लोप, आकारों के इतने विविध प्रकार आकारों और रंगों के इतने सारे द्वंद जो जब-जब घमासान जैसे भी लगते हैं- दृष्टि की स्थिरता नहीं बल्कि बेचैन गतिशीलता शैली पर विजड़ित कूची नहीं बल्कि अपने को अतिक्रमित करने की चेष्टा की झलकें, कम कहने और फिर भी अधिक कहने की फितरत आदि अनेक पहलू अमूर्तन में जाहिर है।

संदर्भ ग्रंथ

1. वृहद् आधुनिक कलाकोश - विनोद भारद्वाद।
2. कला भारती - अशोक वाजपेयी।
3. पुनर्भव - अशोक वाजपेयी
4. दृश्य का चित्र - अखिलेश

Herbs as Natural Healers.

Dr. Nisreen Husain
Asst. Prof. (H.O.D.)
Dept. of Zoology

Introduction

Nature and the natural resources have always been the boon to human race for their survival and sustenance. Plants and herbs have the basic of traditional medicines from ancient times. Such medicinal plants and their natural products, even today form the components of modern pharmacology. Despite their applicability in modern medicines, (Herbal formulations and home remedies have always been the common domestic mechanisms for 'Natural cure' of many diseases, infections and early aging.) It includes the medicinal virtues of all the 'Spices' and 'Herbals' available in domestic Kitchens, that constitute the so-called ('Grandma's Remedies') or ('Dadima's Nuskhas'.)

What is a herb?

A 'Herb' is a plant, green and fragrant, and fit to eat. However there are also a few herbs that are not sweet-smelling and may be unpalatable. Herbs are seed producing small plants that does not develop persistent woody tissue, and dies down at the end of a growing season. In a nutshell, 'herbs' are the plant themselves, or plant parts used for their appetizing sweet-smelling flavours and therapeutic quality.

Hence the herbs are used either as 'Herbal Medicines' in the treatment of illness, or added to the food during or after cooking as the flavouring agents or appetizers. Some of the common herbs used in Indian food are Coriander (Dhaniya Patti), Mint (Podina) and Basil (Tulsi).

As Natural Healers

For the most part of the world, chefs and cooks use the term 'Spices and Herbs' interchangeably. Herbs, in the form of green shoots and foliage, are used in food, or are applied externally as paste on body parts to relieve stress and infections. Spices, on the other hand are mixed in food in dried forms, and their powdered form often mixed with honey, milk, oil, or water, is used as antibiotics or beauty products. (Verschaeve & Staden, (2010)

Some of the Important 'Green Herbs'

Some of the important 'green herbs' from Indian kitchens known for their medicinal value are as follows:

1. Basil Ocimum basilicum, also known as 'Sweet Basil' or 'Tulsi', is a very common plant of India. Indians hold a widespread belief, that if 'Tulsi' is planted around homes and temples, it would ensure happiness and positivity.

Medicinal and Healing Virtues:

A decoction of tender leaves, either with ginger and white pepper, or when boiled with powdered cardamom in some amount of water, act as a preventive for malaria and dengue fever. Pounded leaves with sandal wood paste can be applied on the forehead to relief headache. Leaf juice can be used as eardrops to cure hearing dullness and ear-ache. Decoction with honey and ginger is an effective remedy for bronchitis, asthma, cough and cold. Bowel disorders, nausea and vomiting are relieved with the infusion of green leaves. Genito-urinary system disorders and bladder infections are cured with the seeds of the herb, when mixed with water and jaggery or honey. Sun-dried and powdered leaves, if used for brushing the teeth, relieves tooth pain, foul smell and pyorrhea. Ringworm and other skin infections are cured by applying externally the basil leaf juices. Chewing of few basil leaves prevents stress, as the leaves are regarded as strong anti-stress agents.

2. Coriander

Corriandrum sativum is another commonly used Indian herb. Fresh leaves and dry seeds are used almost daily in Indian homes to flavor different curries, soups, 'dals' and vegetable preparations. It is commonly known as 'Dhaniya Patti' or 'Kotmir'.

Medicinal and Healing Virtues:

Fresh juices of coriander leaves is beneficial in the treatment of digestive disorders, like dysentery, hepatitis and colitis. Coriander leaves strengthen the stomach and promotes its action, also relieve flatulence and increase discharge of urine. Dry seeds are beneficial in the treatment of piles, intestinal worms and acidity. Fresh leaf juice, mixed with banana, is effective to relieve small pox infections. Dry seeds of coriander are powerful cholesterol lowering food. (Gangadeep et al., (2003). A decoction boiled with water, stimulate the kidneys, and thereby bring down cholesterol level. Seeds are effective in the treatment of excessive menstruation. Juice extracted from the fresh leaves, mixed with a pinch of turmeric powder, is an effective remedy for pimples, blackheads and dry skin. A 'chutney' made from coriander leaves, green chillies, grated coconuts and ginger, is considered as an effectives home remedy for abdominal pain due to indigestion.

3. Mint

(Mentha arvensis, commonly known as 'Podina' in India, is used extensively in Indian cooking.) In olden days, it was believed that Mentha, the damsel lover of God, Pluto, was transferred into this herb due to the anger of wife of Pluto and Goddess of wealth. Therefore, mint is commonly known as 'Mentha' in Latin. The leaves have a strong, pungent odour and taste mildly bitter.

Medicinal and Healing Virtues:

Mint is valued as a stimulant which relieves flatulence and forms an ingredient of most drugs prescribed for stomach ailments. It is a good remedy for liver disorders, and helps dissolves gravel in the kidneys and bladder. Mint leaves are excellent appetizer. Fresh leaf-juice helps in relieving the problems of indigestion, threadworms and morning sickness. Mint is an anti-diarrheal food. Fresh mint juice, mixed with lime juice and honey is good in the treatment of diarrhoea. Tuberculosis, asthma and bronchitis are cured with fresh mint

juice, mixed with some amount of pure malt vinegar and equal quantity of honey stirred in carrot juice. Mint tea is effective in spasmodic dysmenorrhea or painful menstruation in young girls. In Ayurveda, powdered mint is regarded as a harmless herb for birth control. Skin infections, dryness and pimples are cured with the mint juice applied externally over the affected areas. Insect

stings, eczema and contact dermatitis are also relieved with mint. Fresh leaves of mint, chewed daily, kills all the harmful odour-causing germs in mouth. Tooth decay and gum problems are also soothed through mint leaves. Gargling with fresh mint decoction and salt is beneficial in the treatment of hoarseness in voice. It keeps the voice clear if used before singing.

4. Tarragon

(Artemisia dracunculus (Tarragon), also known as estragon, is a species of perennial herb in the sunflower family.) Tarragon is an aromatic herb used to add flavor to many dishes and sauces. The dried leaves and flowering tops are known for its flavour.

Medicinal and Healing Virtues:

This exquisite herb is rich in various health benefiting phyto-nutrients that are essential for good health. Traditionally, tarragon has been used as a conventional remedy to stimulate appetite and alleviate anorexic symptoms. The herb is the extremely rich source of vitamins as well as the B-complex group

that operates as the antioxidant as well as cofactors for enzymes in the metabolism. Tarragon leaves can protect heart from cardiovascular disease. The anti-inflammatory impact of antioxidant protects from vessel damages. Tarragon leaves contain additionally potassium mineral that plays the important role in regulating the guts contraction. It conjointly contains certain chemicals that forestall platelets and other blood components from curdling and accumulating in the heart's blood vessels. Tarragon regulates blood circulation, thereby resulting in the proper distribution of nutrients and oxygen in the body. It also flushes toxins from the body and also detoxifies the body. This helps stop the formation and growth of cancer cells, thereby preventing the serious affliction. Adding tarragon tea to the diet relaxes the nerves and additionally regulates the cardiovascular system and helps cure insomnia. Tarragon is traditionally been consumed as a digestive tonic. Adding it to the diet increase the liver's production of digestive fluid that is significant for efficient digestion. Tarragon herb has been used in various traditional medicines for stimulating the appetite and as a remedy for anorexia, dyspepsia, flatulence, and hiccups.

(Dr. Richard Schulze. (2003).

5. Fenugreek

(Trigonella foenum-graecum also known as 'Kasoori Methi' in Hindi,) It is an essential part of Indian spices and used in food not only for enhancing the taste of the food, but it also provides some prevention health benefits. In medicine, it helps to treat all these diseases. The leaves and seeds of the Fenugreek plant are widely used in Indian cuisine. The herb has been traditionally used in Ayurvedic compositions as a moisturizer, specially formulated to hydrate dry skin.

Medicinal and Healing Virtues:

Fenugreek is bitter in taste and increases lactations, soothes tissues which are irritated, stimulates uterus, reduces fever, blood sugar, improves digestion, improves relieving capacity and works as an expectorant, diuretic, laxative, anti-tumor and anti-parasitic effect. The sprouts of fenugreek are useful in promoting hair-growth in men. It works effectively in painful menstruations, in improving lactation in nursing mothers. Men related problems like painful testicles, premature ejac-

ulations and loss of libido are relieved with the help of fenugreek. Fenugreek is mostly used for weight reduction, poor appetite and anorexia. It is used in Chinese medicine to relieve kidney related pain such as back ache. Hernia and edema of legs is also relieved with fenugreek. In Indian traditional medical system, Ayurveda, it is used as an aphrodisiac, for rejuvenation, bronchial and digestive complaints, arthritis and gout. Fresh fenugreek leaves are cooked as a curry and the dried leaves are used for flavoring the dishes. The sprouts of the seeds are used in salads. Fenugreek is used for relieving ulcers, eczema, boils and cellulite. It is a proven fact that by consuming fenugreek cholesterol can be balanced. Fenugreek is effective in relieving type 2 diabetes. Seeds of Fenugreek contain mucilage which helps in soothing gastrointestinal inflammation. It coats the lining of intestines and stomach. Hence it works effectively against acid reflux and heartburn. (Fu et al., (2013).

1. Ocimum basilicum
2. Corriandrum sativum
3. Mentha arvensis
4. Artemisia dracunculus
5. Trigonella foenum-graecum

Conclusion

Plants and herbs are rich in phytonutrients and antioxidants. This attributes to their therapeutic importance, because of which they have been utilize as medicines in ancient time. Hence, they are called as 'Medicinal Plants'. Native practices and traditions passed down orally, enabled human beings to eventually adopt many of the herbal remedies. (Kirtikar & Basu (2001). The commonly used herb and spices in Indian homes, not only act as appetizer and flavouring agents, but also forms the significant components of herbal drugs. The herbs and spices with rich nutritive and pharmacological values, are the most easy and ready to use home remedies from the Indian cuisine.

Reference

Dr. Richard Schulze. (2003). Healing Liver and Gallbladder Disease Naturally. Santa Monica, California: Natural Healing Publications.
Fu, D.L., Lu, L., Zhu, W., Li, J.H., Li, H.Q., Liu, A.J., Xie, C., Zheng, G.Q. (2013). Xiaoxuming decoction for acute ischemic stroke: a systematic review and meta-analysis. J. Ethnopharmacol.148, 1-13.

Gangadeep DS, Mendiz E, Rao AR, Kale RK (2003). Chemopreventive effects of Cuminum cyminum in chemically induced forestomach and uterine cervix tumors in murine model systems. Nutr Cancer. 47(2):171-80.

Kirtikar KR, Basu BD. (2001). Indian medicinal plants with illustrations. Ed 2, Vol. 2, Orientalenterprises Dehradun,.

Verschaeve, L., Van Staden, J. (2010). In vitro cytotoxic and mutagenic evaluation of thirteen commercial herbal mixtures sold in KwaZulu-Natal, South Africa. S. Afr. J. Bot. 76, 132-138.

जी.एस.टी. से स्वरोजगार की संभावनाएं

डॉ. शशि कश्यप
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग

पूरे देश में एक राष्ट्र एक कर के रूप में जी.एस.टी. की प्रणाली 1 जुलाई 2017 से लागू हो गयी है। यह नवीन कर प्रणाली व्यवसायी, उपभोक्ता एवं सरकार तीनों के लिए फायदेमंद है। इसके अलावा यह रोजगार सृजित करने वाली प्रणाली है। इस प्रणाली में बड़ी मात्रा में जी.एस.टी. के पंजीयन लेखांकन एवं रिटर्न भरने के लिए एकांउटेंट की जरूरत होगी।

प्रारंभिक :- जी.एस.टी. अर्थात् गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (माल एवं सेवाकर) का भारत में लागू करने की तिथि एक जुलाई 2017 है। यह अप्रत्यक्ष कर है। अर्थात् इसको व्यापारी ग्राहकों से वसूल करता है। इस कर का आखिरी भार ग्राहकों पर पड़ता है।

यह कर प्रणाली, भारतीय कर प्रणाली को अभूतपूर्व सुधार है। इस कर प्रणाली हेतु पहले निम्नानुसार करारोपण होता था :-

केन्द्र के कर

(1) सेन्ट्रल एक्साईज ड्यूटी (Central Excise Duty) -

माल के निर्माण करने से माल को हटाने पर कर लगता था। जैसे कार फैक्ट्री में कार बनाने के बाद फैक्ट्री से गोदाम भेजने पर निर्माता को एक्साईज ड्यूटी देना पड़ता था । इस पर पृथक से सरचार्ज भी लगते थे।

(2) सर्विस टैक्स -

यह सेवा (Service) पर लगेगा। जैसे रेस्टोरेन्ट सर्विस, मोबाईल सर्विस ब्यूटीपार्लर (आदि) इसमें माल का आदान-प्रदान नहीं होता। इस पर भी पृथक से सेस लगता था।

राज्य के कर

(1) वैट-वैट - या मूल्य सवंर्धित कर माल के विक्रय पर लगता था। यह विक्रय मूल्य पर लगता था।

(2) प्रवेशकर - जब माल बनने के बाद किसी अन्य पंचायत या नगरीय निकाय के सीमा में प्रवेश कराते थे तो उस पर प्रवेश कर लगता था यह चुंगी कर का ही प्रकार है।

(3) क्रयकर - जब कोई वस्तु अपंजीकृत (जिसका वेट में पंजीयन नहीं है) व्यक्ति से क्रय करके निमार्ण में उपयोग किया जाता था तब उस खरीदे माल के क्रय मूल्य पर कर लगता था।

पुराना कर प्रणाली के अंतर्गत व्यवसायियों को :-

(1) सेन्ट्रल एक्साईज,

(2) सर्विस टैक्स,

(3) वेट, एवं

(4) केन्द्रीय विक्रय कर के अंतर्गत पंजीयन लेना होता था।

तथा इनके रिटर्न भी भरने होते थे। इन करों को तथा मनोरंजन कर, वृत्तिाकर, प्रवेशकर आदि को मिलाकर जी.एस.टी. के नाम से नया कर लगाया गया है। नये कर प्रणाली से व्यवसायी, उपभोक्ता एवं सरकार सभी को फायदा है।

जी.एस.टी. में कर संरचना

जी.एस.टी. में अब सेंट्रल एक्साइज ड्यूटी, सेन्ट्रल सेल टैक्स, प्रवेशकर, वेट के स्थान पर एक कर जी.एस.टी. लगता है।

जी.एस.टी. के दो भाग है

Intra State Supply - जब राज्य के भीतर ही सप्लाई होगा तो सप्लाई पर CGST एवं SGST लगेगा । CGST एवं SGST की दरें समान है। राज्य के भीतर सप्लाई विक्रय से तात्पर्य है माल या सेवा (Goods or Service) के Recipient (प्राप्तकर्ता) और सप्लायर (प्रदाता) एक ही राज्य के है तथा माल और सेवा का सप्लाई, राज्य के भीतर हुआ है तो इसे इन्ट्रास्टेट सप्लाई (राज्य के भीतर) कहते है।

Inter State Supply - जब सप्लायर अपने पंजीयत राज्य से

अलग दूसरे राज्य में सप्लाई करता है। तो इसे Inter State Supply कहते है। इसमें व्यवसायी IGST* लगाता है।

IGST - इसका अर्थ Integrated Goods & Service Tax है यह Inter State Supply में Charge किया जाता है। IGST का Rate CGST+SGST के बराबर होता है। IGST मद में जमा होने वाली कर राशि केन्द्र और उस राज्य के बीच बंटता है, जहाँ माल का खपत होता है।

जी.एस.टी कैसे रोजगार पैदा करने वाली प्रणाली हैं ?

(1) सभी राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों में जी.एस.टी से रोजगार बढ़ने की उम्मीद है ।

(2) वर्तमान में देश में जितने व्यवसायी पंजीकृत है, इनके रिटर्न संबंधी सेवा प्रदान करने वाले कर प्रोफेशनल (चार्टर्ड एकांउटेंट एवं अधिवक्ता) सीमित है ।

(3) जीएसटी प्रणाली में व्यवसयियों की पंजीयन संख्या बढ़ेगी। एक अनुमान है कि इनकी संख्या दुगुनी से ज्यादा हो जायेगी।

(4) बहुत बड़ी मात्रा में व्यवसायी मुख्यालय से दूरस्थ जिले में व्यवसाय करते हैं लेकिन समस्त कर प्रोफेशलन मुख्यालय में ही रहते हैं।

(5) देश के कुल व्यावसायियों में 20-30 प्रतिशत व्यवसायी ही रिर्टन फाइल करते हैं। शेष व्यवसायी को रिटर्न भरने के लिए जानकार व्यक्ति की जरूरत है।

जी.एस.टी रिर्टन भरने के लिए निम्न की आवश्यकता है -:

(1) कम्प्यूटर/लैपटॉप, कुर्सी, टेबल, इंटरनेट कनेक्शन।

(2) कार्यालय में अधिनियम के प्रावधानों की निःशुल्क ट्रेनिंग।

(3) साफ्टवेयर की निःशुल्क ट्रेनिंग।

(4) समस्या निवारण हेतु फोन से संपर्क सुविधा।

सरकार ने यू तो जी.एस.टी के बाद रोजगार से सम्बधिंत ऐसे कोई आंकड़े नहीं दिये है किन्तु मानव संसाधन सलाहकारों ने यह अनुमान लगाया हैं कि आगे दो-तीन वर्षो में दो से तीन लाख रोजगार की संभावनाऐं हैं।

नृत्यकला और मूर्तिकला का अंतर्संबंध

प्रो.- ऋचा ठाकुर, प्राध्यापक (नृत्य)

आदिकाल से ही कला सामाजिक, सांस्कृतिक रूप में मानव से जुड़ी हुई है। मानव के निरंतर विकास और परिवर्तन में कलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय समाज, संस्कृति एवं सभ्यताओं का ऐतिहासिक प्रतिबिम्ब ये कलायें ही हैं। इनमें निहित सौंदर्य की अभिव्यक्ति ही कला है।

मूर्तिकला में नृत्य का विशुद्ध एवं सफल चित्रण इसीलिये संभव हो सका है, क्योंकि दोनों कलायें एक दूसरे से मूलरूप में अत्यधिक जुड़ी हुई है।

इनके संबंध को समानता के अनेक स्तरों पर भी विश्लेषित किया जा सकता है लेकिन मूलभूत अंतर केवल माध्यम की भिन्नता का है। समानता का प्रमुख बिंदु यह है कि दानों ही कलायें अपनी-अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम के अनुरूप शरीर का उपयोग करती हैं अर्थात् आंगिक अभिनय प्रमुख साधन के रूप में प्रयुक्त है। शास्त्रीय नृत्यों में प्रयुक्त आंगिक अभिनय और मूर्तियों में प्राप्त अंग भंगिमाओं अत्यधिक साम्यता है या यह भी कह सकते है कि दोनों ही कलाओं के मध्य तात्विक अंतः संबंध हैं, ये एक दूसरे की पूरक हैं। कलाओं के प्रमुख तत्व कल्पना, बिम्ब एवं प्रतीक के आधार पर भी इनमें साम्यता परिलक्षित होती है। अंतर केवल प्रस्तुति की शैली में है। नृत्य चलायमान कला है तो उसकी भाव भंगिमा, मूर्तिकार के माध्यम से स्थिरमान हो जाती है। मूर्तिकार द्वारा नृत्य के इन स्थिरमान अंग एवं संचालनों का अंकन यह स्पष्ट करता है कि संगीत, नृत्य, चित्र वादन, जो आपस में भी घनिष्ठता से जुड़े हुये हैं इनमें योग और साधना का परिलक्षण होता है। जिसका अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही है। भारतीय कलाओं की परंपराओं का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति और परमानंद में लीन होना है न कि केवल रंजकता और चमक तक ही सीमित हो जाना। मोक्षप्राप्ति का उच्च साधन नृत्यकला और मूर्तिकला दोनों ही है। आपस में अत्यधिक जुड़कर, एक दूसरे की विशेषताओं को ग्रहण करते हुये ये अपने-अपने लक्ष्य तक पहुँचती है। दोनों ही स्वरूपों में परमानंद की अनुभूति प्राप्त होती है।

भारत के मंदिरों में मूर्तिशिल्प के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में बात करे तो छत्तीसगढ़ का खजुराहों कहा जाने वाला भोरमदेव का मंदिर मूर्तिशिल्प एवं नृत्य के अर्न्तसंबंध का उत्कृष्ट उदाहरण प्रतीत होता है। भोरमदेव मंदिर की भित्तियों में एकाकी नर्तकी के अंकन की बहुलता है। भरत के नाट्यशास्त्र के चौथे अध्याय में नृत्य भंगिमाओं के 108 करण गिनाये गये हैं करण का अर्थ है-नृत्य में हस्त तथा पादों से मिलकर हलन चलन करने को करण कहते है। अधिकांश करणों का अंकन चिदम्बरम मंदिर के गोपुर में हुआ है, किन्तु भोरमदेव मंदिर में भी कुछ करणों का अंकन एक स्थान पर दिखाई देता है। नर्तकी के दोनों हाथ कटि में एवं पैर अरमण्डी की स्थिति में दिखाई दे रहे हैं। भरतनाट्यम में प्रथम मुद्रा अरमण्डी है, किन्तु उसने दोनों पैरों के घुटने बाहर की ओर फैले होते हैं एवं पैर 'वर्धमान स्थानक' की स्थिति में होते हैं। उक्त मूर्ति में घुटने आपस में जुड़े हुये और पैर एड़ियों से बाहर की ओर निकले हुये हैं- इस भरतनाट्यम की आरंभिक मुद्रा से मिलता हुआ मान सकते हैं। उक्त भंगिमा की तुलना नाट्यशास्त्र में वर्णित करण क्रमांक 40 छिन्न से की जा सकती है। इनमें से कुछ नायिका मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है।

नायिका मूर्तियाँ – नायिकाओं की मूर्तियां मूर्तिकला की प्राण मानी जाती हैं। देश के हर हिस्से में ये मूर्तियों दृष्टव्य है। इन्हें अप्सरा मूर्तियों से जोड़कर देखा जा सकता है। वैदिक काल से ही नायिकाओं का अंकन देखने को मिलता है। 'अथर्ववेद' ने गंधर्वों के साथ, 'शतपथ ब्राम्हण' में हंसिनी के रूप में, रामायण, महाभारत में इनका उल्लेख है। लगभग सभी प्राचीन मंदिरों में नायिका मूर्तियाँ अंकित हैं।

भोरमदेव मंदिर भी नायिका मूर्ति तथा नारी सौन्दर्य अंकन में अपना विशिष्ट श्रृंगार प्रसाधन में रत, घुंघरू बांधती हुई, सद्यःस्नाता, एकल, सामूहिक नृत्य करती एवं अनेक कार्यकलाप में संलग्न देखी जा सकती है। मंदिर की बाह्य भित्तियों में निरूपित इन मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है।

दर्पण विभ्रम नायिका - इस नायिका को रूपगर्विता नायिका की श्रेणी में रखा जा सकता है। इसके बायें हाथ में दर्पण है और उसकी सहायता से वह अपने सौन्दर्य को निहार रही है। कटि त्रिभंग मुद्रा में है। आलीढ़ स्थानक मुद्रा में खड़ी हुई है। भरतनाट्यम में इस श्रृंगारिक मुद्रा का प्रयोग होता है।

सद्यः स्नाता - यह नायिका अभी-अभी स्नान कर आई प्रतीत होती है। इसके नेत्र अवनत (झुके हुये) हैं एवं वह अपने बायें हाथ से केशराशि सम्हाल रही है। वहीं नीचे हंस ऊपर की ओर निहारते हुये अंकित है। दायां हाथ डोला मुद्रा में वस्त्र पकड़े हुए हैं । कटि त्रिभंगी एवं आलीढ़ स्थानक में नायिका खड़ी हुई है। भरतनाट्यम में जब नायिका नड्य

(चलन) करती है तो इस भंगिमा का प्रदर्शन होता है।

अलसा नायिका- इस नायिका की मूर्ति खजुराहों की अलसा नायिका से बहुत साम्य रखती है। इसके दोनों हाथ ऊपर अंगड़ाई की मुद्रा में उठे हुये हैं। नेत्र निमीलित (आधे मुंदे हुये) एवं ग्रीवा तिर्यक एवं सिर परावृत मुद्रा में है। कटि त्रिभंगी एवं बायाँ पैर जमीन पर एवं दायां घुटने से मुड़ा होकर ऊपर उठा हुआ है। इसे संगीत रत्नाकर में वर्णित देसी स्थानक ''एक जानुगत'' से साम्य रखता हुआ मान सकते है। चूंकि इस मूर्ति में गतिशीलता का भाव दिख रहा है। इसलिए इसे आकाशचारी का एक स्वरूप भी माना जा सकता हे। इसके दोनों हाथ कर्कट मुद्रा में अंगड़ाई लेते हुये प्रतीत हो रहे हैं। नायिका के श्रृंगारिक भाव को ऐसा प्रयोग भरतनाट्यम में किया जाता है।

घुंघरू बांधती हुई नर्तकी - तत्कालीन समय में भी नृत्य संगीत को उच्च स्थान प्राप्त था। जिस प्रकार ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए अप्सरायें नृत्य किया करती थी, उसी प्रकार मंदिर में स्थापित भगवान की मूर्तियों के लिए नर्तकियों, देवदासियों का नर्तन कराया जाता रहा है। संभवतः इसी कारण मंदिरों की भित्तियों में नायिकाओं के शिल्प अंकित किये जाते रहे हैं। भोरमदेव मंदिर की दक्षिण दिशा की बाह्य भित्ति पर एक नर्तकी को अपने बायें पैर में घुंघरू बांधते हुये दिखाया गया है। उसका दायां पैर घुटने से किंचित मुड़ा हुआ है जिसे भरतनाट्यम के अनुसार अरमण्डी (आधा बैठा) माना जा सकता है। उसे पैर में घुंघरू स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं, मानो वह अपनी प्रस्तुति के लिए तैयार हो रही है। घुंघरू नृत्य के लिए अपरिहार्य माना जाता है। नर्तकी भावप्रणव मुद्रा में है।

इसी प्रकार नायिकाओं की नृत्य करती हुई अनेक मूर्तियाँ समान मुद्रा में अंकित है। नाट्यशास्त्र में वर्णित करण क्रमांक 7 स्वास्तिक रचित क्रमांक 12 , अर्धरेचित क्रमांक 22 अर्धस्वास्तिक क्रमांक 35 भुजंगत्रस्तरेचित 40, भुजंगचित आदि के वर्णन से मिलती हुई इन मुद्राओं को भरतनाट्यम शैली में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि भोरमदेव के मंदिर में अंकित मूर्तियाँ सौन्दर्य भावना एवं सामाजिक क्रियाकलापों का जीवंत दर्शन कराती है। चूंकि इन मूर्तियों का सृजन दक्षिण के अनेक मंदिरों से प्रभावित दिखता है अतः उसके नृत्य दृश्यों में भी दक्षिण का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है जहां प्रमुख नृत्य शैली भरतनाट्यम सर्वकालिक चरमोत्कर्ष पर रही है।

Emotional Intelligence: An Indian Perspective

Dr. Tripti Bala
Psychology

Emotional Intelligence is the ability to acquire and apply knowledge from our own emotions and the emotions of others in order to be more successful and lead a more fulfilling life. Being originated as a western concept, it is having a lot of importance in Indian society. The Indian perspective about emotional intelligence is far more in depth evaluation of basic human qualities, as mentioned in ancient scriptures and spiritual practices. The development of 'Self' and 'Self actualization' is the basis of developing skills of emotional regulation and management.

Introduction

Emotion is an important part of our life, as it affects all aspects of life. Most truly, it is the soul of every relationship. Being an integral and significant aspect of human nature and the motivation for behavior, emotions serve as one of the most important ingredient of human nature. In psychological terms, emotion refers to a feeling with its distinctive thoughts, psychological and biological states and ranges of propensities to act (Singh, 2001). It is not only psychological experience but it effects the body as well. Historically, emotions have been largely viewed as disorganizing forces that disrupts one's ability to reason and think. So people use to repress their emotions. But now, it is thought that emotions provide information, direct attention, and facilitate the attainment of goals. So it became a fact that the expression of emotions act as a natural healing system for our pains and traumas. The suppression of one's feelings leads to abnormal behavior across the life span (Plutchik, 2000). Therefore, expression of emotions is necessary for our well-being. But it is very important to express the emotions at the right time, at the right place, to the right person and to the right extent. Expression of emotions in this way must require the ability to understand one's own emotions and that of others, and to deal effectively with them; more specifically, termed as 'Emotional Intelligence'. This is the merger of both emotion and intelligence, as a cognitive ability. We can understand the concept of emotional intelligence as the ability to be aware of our feelings and of other's too, to manage them well and to keep a balance between emotion and reason so as to maximize productivity and happiness. It is closely associated with emotional literacy which involves the integration between head and heart.

The cultural aspect of Emotional Intelligence

Individuals approach emotions differently across cultures, sub cultures, within societies or families (Sibia, Misra, srivastava, 2004). Indian culture is different from that of the western culture in many respects. An Indian family is based on emotion bonding which is unlimited and everlasting. Social concerns such as well being of others and fulfilling one's duty constitute a dominant part of Indian traditions, along with social skills such as respecting elders or helping others constitutes the salient features of Indian culture.The moral values like non violence, caring, kindness, are actually the emotional expressions valued by Indians. These moral values provide the basis for emotional expression and response. The Indian view of emotional learning may therefore be related to the construction of 'self' through the process of self-perception and self-monitoring in accordance with the socio-cultural context. The concept of Emotional Intelligence in Indian context is enriched with highly valued social concern, virtues, religious traditions, and cultural practices. Emotional intelligence, according to western view, is a mental ability or skill to be acquired by an indi

vidual through hierarchical progression of these abilities. It is, however, distinguished from socially valuable traits like warmth, trustworthiness, sociability etc. This view holds that an individual is competent or successful if a person can regulate the external environment.In western culture 'self' is considered as an independent, self-contained and autonomous entity (Markus and Kitayama, 1991). In contrast to this, 'self' in non-western societies, particularly in India, is defined in relation to others, as the person is not considered separate from the social context but more connected and less differentiated from others (Srivastava and Misra, 2007).

The Indian tradition has emphasized some independent but interrelated concepts of Emotional Intelligence and these are Detachment, Impulse control, and Transcendence (Palsane and Lam, 1996). One of the important among these is the principle of 'Detachment', which involves one viewing pleasure as well as suffering with equanimity; that means, neither being too involved in the objects of pleasure and nor being too concerned about avoidance of suffering or pair. This is seen as part of one's essential nature and this helps to minimize the emotional impact of success and failure (Paranjpe, 1996). It is the foundation for emotional stability. Next is the concept of 'impulse control', which is related to the theme of desires. The religious practices in Indian culture help an individual to develop this one. These virtues of Detachment and Impulse control are combined in the 'Bhagvadgita' describing this a personality type called ' Sthitaprajna' which refers to "one whose intellect is stable". The empirical evidence to support this view is drawn by Naidu, 1986; Srivastava, Naidu and Misra, 1986. Further, 'Transcendence' implies consideration of something beyond oneself, of other people, other things and the world. This type of thinking takes one away from one's selfishness and is therefore, consistent with the course of development of a civilization from one's own self to a larger collective self.

Conclusion:

The notion of emotional intelligence is varying from cultural perspective but it can be said that, it is our very own concept of expression of emotions in an intelligent way so that people can acquire the skill of empathy and eventually manage their feelings without any impulsive reactions. Consequently, the moral values and cultural traditions provide a frame for emotional competencies.

References:

Markus, H.R., and Kitayama, S. (1991). Culture and the self: Implication for cognition, emotion and motivation .Psychological Review, 98, 224-253.

Palsane, M.N. and Lam, D.J. (1996) Stress and coping from traditional Indian and
Chinese Perspectives. Psychology and developing societies, 8, 128-153.

Paranjpe, A.C.(1996) Some basic Psychological concepts from the intellectual
tradition of India.

Plutchik, R. (2000) Emotions in the practice of Psychotherapy. Washington, D.C.: American Psychological Association.

Sibia, A. Misra, G. and Srivastava, A.K. (2004). Towards understanding
emotional intelligence in the Indian context: Perspectives of Parents, teachers and
children. Psychological studies, 49, 2-3, 114-123.

Singh, D- (2001) Emotional Intelligence at work. A practical Guide, New York
Prentice Hall, India Pvt. Hd.

Srivastava, A.K. and Misra, G. (2007) Culture and conceptualization of
intelligence. New Delhi: NCERT.

Srivastava, A. , Naidu, R.K. and Misra, G. (1986) Impulse control, Stress and
performance. Upanishad Manuscript. Department of Psychology, University of
Allahabad, Allahabad.

Naidu, R.K. (1986). Belief, trust, impulse control and health. Journal of social and economic studies, 3, 370-377.

Challenges and Opportunities of e-Commerce in India

Dr.K.L.Rathi
HOD (Commerce)

E-Commerce is the process of buying and selling of goods or services all over the computer network through which transaction or term of sale or purchase are performed electronically... It got its start in the late 1990s but it became a very popular choice in 1991 amongst all the people who uses internet. In 2002 India first time encountered the online ticket booking from anywhere at any time with the online E-Commerce via IRCTC. After getting success in 2002 the online ticket booking was followed by airline like Airdeccan, SpiceJet, etc. which was helpful to introduce low cost airline to the public but it gets more popularity with the foundation of deep discounted model flipkart by Sachin Bansal and Binny Bansal in 2007. Soon other portals like Snapdeal, Amazon, Jabong, etc. started hunting India for their business. I nearly stage people do online shopping with fewer options. The users just place an order and pay cash on delivery but today people do online shopping with lots of options like time to timed is counts, offers, 30days return guarantee, 1-7days delivery time, etc. and added new flavours to the industries. Increase in the E-Commerce industries in the last couple of years, there by hitting the market with a boom. Computer hardware, technically qualified staff, computerized system of receiving payment, well designed websites, adequate telecommunication facilities, etc. are some of the important resources that are helpful for implementation of electronic commerce in India. But some of the companies still face lots of challenges like lack of security issues which increases the chances of theft or fraud, illiteracy, lack of technical knowledge. Nowadays, most of the people used to say that Demonetization motivates Digitalization but today also when it comes to online payment people still prefer COD i.e. Cash on Delivery option and some of them who preferred online payment, inadequate range of frequencies occurred either at the time of payment or display of products which divert the mal so towards COD option. So, we are able to say that Cash is King in India and is one of the major challenges of e-commerce. But above all the challenges, e-commerce still have lots of opportunities in India like reduction in the cost of internet access which motivates large number of people to have internet connection because of which e-commerce are at heightened. China's Alibaba Group, Japan's Soft Bankand Taiwan's device maker Foxconn are invested $500 million in India's second largest e-commerce firm Snapdeal which is considered as an unbeatable expansion in India. Amazon startup House joy facilities which let the consumer's book local plumbers, electricians and beauticians online. In this way we are able to say that Electronic Commerce has some future in India and there may be a time came when whole India became digitalized and it will be accepted by each and every people of India.

हिन्दी का स्वाभिमान

डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

मनुष्य को पशुओं से भिन्नता दिखाने वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक 'भाषा' है। अगर भाषा हमारे पास नहीं होती तो हम मनुष्य नहीं होते । पश्चिमी मुहावरे में कहें तो It there is no word then there is no world. विश्व में मौजूद प्रत्येक भाषा के पास मुकम्मल विश्वदृष्टि होती है । कोई भी भाषा चाहे बोलने वाले के हिसाब से छोटी हो या बड़ी शब्दों की संख्या भले ही कम हो पर उन्हीं शब्दों के माध्यम से विश्व को जानने-समझने परखने की पर्याप्त क्षमता होती है । भाषा विद गणेश एन देवी की मानें तो, भाषाएं कभी नहीं मरतीं। समय परिवर्तन के साथ अत्यन्त सीमित भले हो जाती है । इतिहास गवाह है कि ग्रीक भाषा की तरह जिस भी भाषा ने विश्व में साम्राज्य स्थापित करने की कोशिश की तो साम्राज्य के ध्वंस के साथ ही भाषा भी अवशेष मात्र के रूप में ही जीवित रहीं ।

भारत की 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार 96 प्रतिशत भारतीय कुल 4 प्रतिशत भाषा का प्रयोग करते है जबकि 4 प्रतिशत भारतीय देश की कुल 96 प्रतिशत भाषा बोलने वाले हैं। जनसंख्या के कुछ अपने देश में रोचक आँकड़े इस प्रकार है - भारत में अंग्रेजी जानने वाले लोगों के तीन वर्ग है । 2 प्रतिशत लोग अच्छी अंग्रेजी लिखना और बोलना जानते हैं । लगभग 8 से 10 प्रतिशत लोग औसत अंग्रेजी जानने वाले तथा 88 से 90 प्रतिशत लोगों को अंग्रेजी नहीं आती । गुगल के आँकड़ों पर गौर करें तो देखते हैं कि भारत में इंटरनेट पर हिन्दी का इस्तेमाल सलाना 94 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। प्रत्येक 5 में से एक भारतीय हिन्दी का इस्तेमाल कर रहा है वहीं

अंग्रेजी सिर्फ 14 फीसदी की दर से बढ़ रही है । इन आँकड़ों का विश्लेषण कर देंखे तो भारत में अँग्रेजी भाषा से देश को कोई परेशानी नहीं । हिन्दी भाषा को अंग्रेजी से कोई खतरा नहीं । दलअसल भारत की मूल भाषा समस्या अंग्रेजियत है ।

अंग्रेजियत की शुरुआत 18वीं सदी के आरंभ से हुई जब भारत में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई । भारत में छापे खाने की शुरुआत हुई । विलियम जोन्स, एल फिन्सटन आदि अंग्रेज विद्वानों एवं एशियाटिक सोसायटी इत्यादि संस्थाओं ने भारतीय भाषाओं को समझने एवं इन भाषाओं में निबद्ध ग्रंथों को सामने लाने की महत्वपूर्ण कोशिश की । परन्तु अधिकांश अंग्रेज विद्वानों की मंशा भारतीय भाषाओं में लिखे ग्रंथों को मूल्यहीन अर्थहीन घोषित करने की रही । वास्तव में भारत की ज्ञान परम्परा वैदिक काल से श्रुति परम्परा पर आधारित थी । शास्त्रीय एवं लोक का सारा ज्ञान वाचिक परम्परा की व्यापक धरोहर थी । छापे खाने के अविष्कार से अंग्रेजों ने इस भ्रम को प्रसारित किया कि छपी हुई चीजें ही सत्य है, प्रामाणिक है, मूल्यवान है।

भारतीय जनमानस में इस झूठ को फैलाया कि भारतीय वाचिक परम्परा केवल मिथ है, गलत है, कथा है उसकी सत्यता नहीं, अतः सारहीन है । इस मसले को उठाते हुए रामानुजन बताते हैं कि भारत में किसी ने महाभारत ग्रंथ नहीं पढ़ा परन्तु प्रत्येक भारतीय महाभारत की पूरी कथा जानता है । सारे पात्रों से परिचित हैं क्योंकि भारतीयों के संस्कार वाचिक परम्परा से ही निर्मित हुए थे, जो हमारी परम्परा थी । अंग्रेजों ने इसीलिए इस परम्परा को पहले नष्ट किया। राजाराम मोहन राय, दादाभाई नौरोजी, रानाडे, आदि भारतीय बुद्धिजीवी अंग्रेजी भाषा और साहित्य से इतने अभिभूत हुए कि उस अंग्रेजी को सर्वश्रेष्ठ मान बैठे जिसकी खुद अपनी लिपि नहीं थी । यह वह दौर था जब भारतीय पर अंग्रेजों का पूर्ण आधिपत्य हो रहा था तथा भारतीय जनमानस पर अंग्रेजों की भाषा और अंग्रेजियत का महत्त्व स्थापित हो रहा था ।

1917 में भरूच (गुजरात) में महात्मा गाँधी ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को सर्वप्रथम मान्यता दी । वर्षों के कड़े संघर्ष के बाद, 1947 को भारत अंग्रेजों की दासता से तो मुक्त हो गया परन्तु 200 सालों की मानसिक गुलामी में मुक्त होना सरल न था । जनमानस की औपनिवेशिक दासता विविध रूपों में दिखाई पड़ती है जिसमें भाषिक दासता भी प्रमुख है। आजादी के बाद भी हमारे शासन तंत्र में अंग्रेजी और अंग्रेजीदाँ लोगों का वर्चस्व रहा जो आज तक है । जबकि हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं ने अपनी महत्ता स्थापित की । आज विश्व के लगभग 115 देशों के शिक्षण संस्थानों में हिन्दी सहित भारतीय भाषा विभाग स्थापित है। लेकिन फिर भी हिन्दी भाषा को रोजगार से जोड़ने की कोई सफल मुहिम नहीं दिखाई देती । जबकि हमने देखा है कि उदारीकरण के बाद जब विभिन्न देशों के कॉल सेन्टर भारत में खुलने लगे तो कैसे अंग्रेजी ने भारत में अपना वर्चस्व स्थापित किया । पेट की भाषा के रूप में युवा शिक्षित मध्यवर्ग का सपना हो गई अंग्रेजी ।

जब भी मध्यवर्ग उच्च वर्ग में संक्रमण करता है तो सबसे पहले अपनी मातृभाषा छोड़ता है फिर गाँव घर और फिर अपनी मातृभाषा के आत्मीय लोगों को । अपनी भाषा छूटने के साथ ही व्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वाभिमान भी छूट जाता है । आज हम अपने राष्ट्र प्रमुखों द्वारा विदेशी धरती पर हिन्दी में दिए अपने भाषण पर गर्व करते हैं पर यकीन मानिए जिस दिन भारतीय राष्ट्र प्रमुखों द्वारा अंग्रेजी में दिए भाषण की आलोचना या निंदा करना शुरू कर देंगे उस दिन हम सच्चे अर्थों में हिन्दी के सम्मान के लिये खड़े होंगे ।

प्राचीन भारत की मुद्रा व्यवस्था

शबीना बेगम
इतिहास

मुद्रा का विकास क्रम मानव समाज की आर्थिक प्रगति के पड़ावों का इतिहास है। मुद्रा की प्राचीनता प्रागैतिहासिक मानव द्वारा बदलने में पाने की इच्छा से दिये गये, उपहारों से प्रारम्भ होती है । यह लेन-देन की प्रक्रिया वस्तु-विनिमय तक ही सीमित थी । आर्थिक-सामाजिक विकास के परिणामस्वरूप लेन-देन की व्यवस्था में कठिनाइयाँ उत्पन्न होने लगी । जैसे-जैसे समय बीतता गया वस्तु विनिमय की व्यवस्था अव्यावहारिक होने लगी फिर भी परम्परागत रूप से यह प्रथा बहुत बाद तक अस्तित्व में रही । यहाँ तक कि आज भी ग्राम्य समुदायों में वस्तु विनिमय की प्रथा न्यूनाधिक रूप से प्रचलित है।

मानव संस्कृति का प्रारम्भिक चरण जिसे पुरापाषण काल कहा जाता है, में मानव की आवश्यकता अत्यन्त सीमित थी तथापि उपयोगी पत्थरों का आदान-प्रदान मध्य पाषाण युग में प्रारम्भ हो गया था।[1] नवपाषण काल उदय के साथ ही मानव की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ । इस काल में खाद्य संग्रहक एवं खाद्य उत्पादक जैसे विभिन्न समुदाय आपस में एक-दूसरे के उत्पाद का आदान-प्रदान करते थे । कालान्तर में तक ताम्रयुगीन सभ्यता का आगमन हुआ । अतः इस युग में ताम्र धातु विनिमय का माध्यम बना ।

हड़प्पा सभ्यता भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता थी । आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही प्रकार की समउन्नत व्यापारिक गतिविधियों के बावजूद इस सभ्यता के किसी भी स्थल से मुद्रा के प्रचलन के निश्चित प्रमाण नहीं मिले हैं तथापि इस नगर सभ्यता में एक विशेष बात यह दिखाई देती है कि इसमें माप-तौल प्रणाली विकसित हो चुकी थी । इस काल में विनिमय के माध्यम के रूप में निश्चित तौल के धातु खण्डों का प्रयोग होता था ।

ऋग्वैदिक समाज प्रधानतः पशुचारी समाज था अतः गाय ही विनिमय का प्रमुख माध्यम थी इससे संबंधित अनेक वर्णन ऋग्वेद में मिले हैं ।[2] इसके अतिरिक्त ऋग्वेद में ''निष्क '' शब्द का चार स्थानों पर उल्लेख हुआ है । कुछ मुद्रा शास्त्रियों का मत है कि निश्चित आकार निश्चित तौल, एवं निश्चित मूल्य का होता है।[3] ऋग्वेद में मन,हिरण्यपिण्ड, शतमान आदि के वर्णन भी प्राप्त होते हैं । किन्तु मूल रूप से देखा जाए तो ऋग्वैदिक काल में भी वस्तु विनिमय प्रणाली ही प्रचलित थी ।

उत्तर वैदिक काल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि तौल की मानक इकाई के रूप में कृष्णल अथवा गुंजा का आविष्कार था । कृष्णल को ही परवर्ती साहित्य में रक्तिका या गुनना कहा गया है । आजकल यह रत्ती के नाम से विख्यात है । यव (जौ), तन्दुल (चावल) एवं माण
(उड़द) आदि बीजों का प्रयोग भी तौल की इकाई के रूप में किया जाने लगा था ।

मैत्रायणी संहिता में रजत शतमान का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है । प्रो. अजयमित्र शास्त्री ने मैयत्रायमी संहिता में उल्लिखित रजत शतमान को 'रजत मुदरा' स्वीकारकिया है । पंचविश ब्राह्मण में 'रजत निष्क' का उल्लेख प्रथम बाद मिलता है । वृहदारण्यकोपनिषद में ''पाद'' का उल्लेख मिलता है । यह शतमान अथवा निष्क का चतुर्थांश प्रतीत होता है क्योंकि पाणिनी की अष्टाध्यायी एवं पंतजलि के महाभाष्य में इसका उल्लेख चतुर्थांस के रूप में ही हुआ है ।[5]

वैदिक काल के बाद बुद्ध काल के आगमन तक नगरों के विकास हो चुके थे अब भारतीय अर्थव्यवस्था द्रव्य युग में प्रविष्ट हुई इस कालकी मुद्राओं के संबंध में सूत्र साहित्य, त्रिपिटक साहित्य, पाविनी की अष्टाधयी तथा जाककों के अतिरिक्त पुरातात्विक साक्ष्यों आदि के ज्ञान प्राप्त होता है । मुदरा प्राणाली के अविष्कार के कारण इस काल में कौशाम्बी में घोषक और श्रावस्ती में अनाथपिण्डक जैसे श्रेष्ठि अस्त्वि में आए ।

पाणिनी की अष्टाध्यायी के तीन सूत्रों में निष्क का उल्लेख हुआ है । इनमें से प्रथम दो सूत्रों में निष्क का प्रयोग वस्तुओं के क्रय के संदर्भ में हुआ है ।[6] महाभारत में भी शत एवं सहस्रनिष्क का धारकों का उल्लेख है।[7] अतः ऐसा प्रतीत होता है कि ''निष्क'' बुद्ध काल में स्वर्ण मुद्रा रही होगी । महाजनपद काल में मुद्रा के दो प्रकारों शतमान एवं कार्यापण का उल्लेख साहित्य में प्राप्त होता है । तक्षशिला क्षेत्र से शलाको मुद्राएं भी प्राप्त हुई है । संभवतः मूल्यवान होने के कारण '' निष्क'' और ''शलाका'' मुद्रा आदि का उपयोग दैनिक जीवन में नहीं होता होगा । इनका प्रयोग अर्थव्यवस्था तथा व्यापार के विकास के लिए किया जाता रहा होगा । संभवतः इन मुद्राओं का स्थान बाद में ''कार्षापण'' अथवा ''यण'' मुद्राओं ने ले लिया । चूंकि ये मुद्राएं रजत एवं ताम्र दोनों ही धातुओं की थी और ''शतमान'' तथा ''शलाका मुद्राओ'' की तुलना में कम वजन की थी । अतः दैनिक जीवन में प्रयोग के लिए काफी सुविधाजनक थी ।

साहित्यिक स्रोत स्वर्ण, रजत एवं ताम्र के कार्षापणों का उल्लेख करते हैं । स्वर्ण कार्षापण (सुवर्ण), निष्क 80 रत्ती अर्थात् 146.4 ग्रेन के बराबरहोता था । सही तौल तामर के कार्षापण का भी था । स्वर्ण

और रजत की तुलना में रजत की उपलब्धता भारत में बहुत कम थी । संभवतः इसी कारण रजत कार्षापण का तौल स्वर्ण और ताम्र के कार्षापण की तुलना में कम था । इसका तौल 32 रत्ती अर्थात 58.56 ग्रेन था । संभवतः भारत में रज मुद्राओं का बड़े पैमाने पर निर्माण पश्चिम के साथ व्यापारिक संबंध के साथ ही प्रारम्भ हुआ होगा ।[8]

पाणिनी की अष्टाध्यायी और जातकों में कार्षापण के विभिन्न उपविभागों का उल्लेख मिलता है जैसे अर्थ कार्षापण (1/2 आड्ह कहाषण), पाद कार्षापण (1/4, पाद कहापण), द्वि मापक (1/8, द्वि मापक), माषक (1/6 एक माषक)[9] ।

पर्याप्त साहित्यिक साक्ष्यों के होने के बाद भी मुद्रा की प्राचीनता का सूचक कोई भी पुरातात्विक साक्ष्य छठीं श.ई.पू के पहले का उपलब्ध नहीं है । सर्वप्रथम आहत मुद्राओं की प्राप्ति कृष्ण मार्जित मृदभाण्डों (NPBW) के स्तरों से ही होती है । हस्तिनापुर के उत्खनन से जिस स्तर से आहत मुद्राएं प्राप्त हुई है उनका समय पुरातत्वविद् बी.बी. लाल ने छठी शताब्दी ई.पूं. निर्धारित किया है । इस प्रकार कृष्ण मार्जित मृदभाण्डों के काल में आहत मुद्राओं का सुप्रचलित होना पुरातात्विक दृष्टि से प्रमाणित है।

वस्तुतः पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों ही स्रोतों से छठी श.ई. पू. में भारत में विकसित मुद्रा प्रणाली का अस्तित्व प्रमाणित होता है । यदि छठी श.ई.पू. में विकसित मुद्रा प्रणाली को स्वीकार किया जाए तो मुद्रा की प्राचीनता को सातवीं शताब्दी ई. पू. तक स्वीकार किया जा सकता है क्योंकि आरम्भिक मुद्रा के निर्माण एवं उसके विकास में अवश्य ही सौ वर्ष लग गये होंगे ।

संदर्भ ग्रंथ

1. संकलिया, एच.डी. प्री.एंड प्रोटो हिस्ट्री ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान
2. ऋग्वेद 5.12.8
3. राव. डॉ. राजवंत, राव, डॉ. प्रदीप कुमार, प्राचीन बारतीय मुद्राएं, पृ17.
4. मैत्रायणी संहिता 2.2.2.
5. राव, डॉ. राजवंत, राव डॉ. प्रदीप कुमार, प्राचीन भारतीय मुद्राएं, पृ.20 ।
6. याणिनी अष्टाध्यायी 5.1.20/ 5,1.30/5.2.2119
7. अनुशासान पर्व, 13.43
8. राव, डॉ. राजवंत, राव डॉ. प्रदीप कुमार, प्राचीन भारतीय मुद्राएं, पृ.23.
9. अग्रवाल, वासुदेव शरण, इण्डिया ऐज जोन टू पाणिनी, पृ. 258-273 गंगामल जातक मेहता, आर.एन. प्रि. बुद्धिस्ट इंडिया पृ.235-236

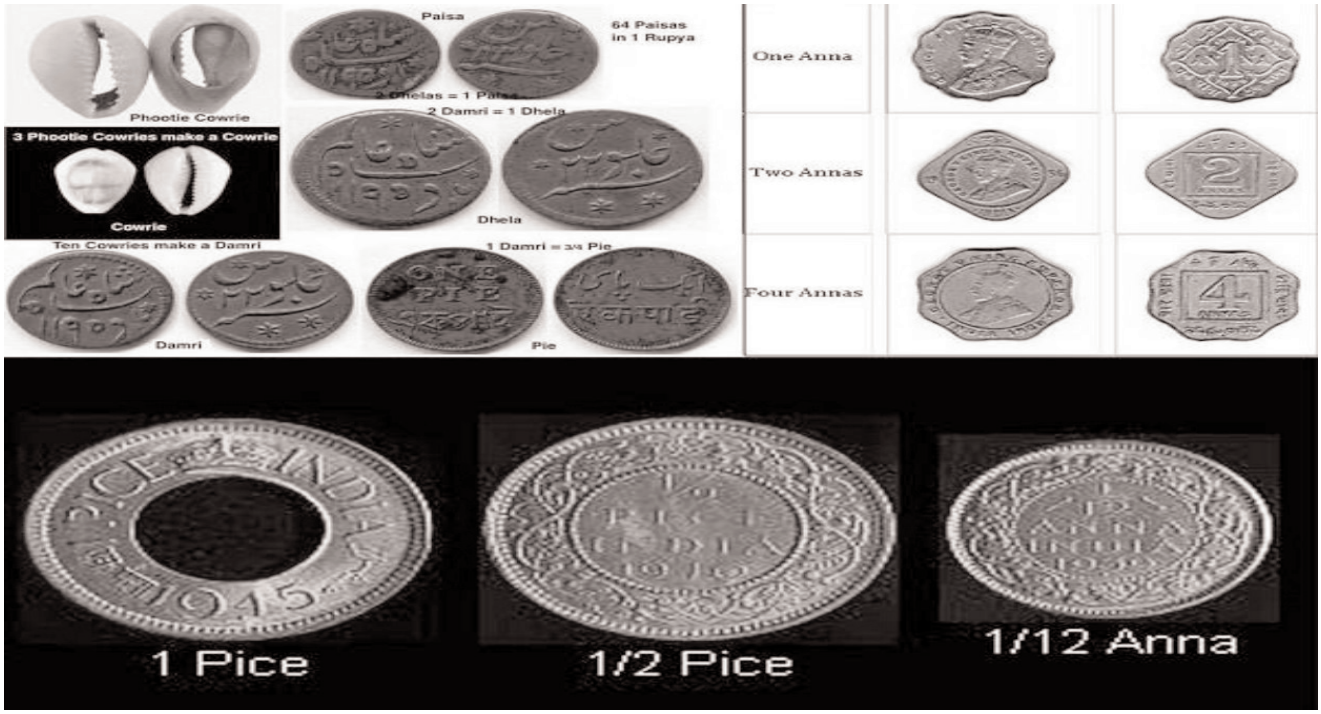

सर्जना

सर्जना के क्षण

दीपक बनकर जल

तू दीपक बनकर जल।
अपने लिए तो सभी जीते हैं
अपने सपने सभी तलाश करते हैं
जो करे पथ का सृजन
ऐसे संकल्पों का निर्माण करते हुए चल
तू दीपक बनकर जल।

आस्था के दीपक मन में
जलाने का हौसला हो
सांसों की लय के साथ
जीवन जीने का संदेश हो
खुद जियो दूसरो को जीने दो
यही समर्पण तेरा विश्वास बन सके
अपने कर्मपथ पर चल
तू दीपक बनकर जल।
उम्मीदों के साथ हर रास्ता तय हो
अपनी मंजिलों तक पहुंच सके तू
पथरीले रास्तों पर अकेले चलने का प्रण हो
समय के तेजधार में
अपनी पहचान कायम करते चल
तू दीप बनकर जल।

- तृष्णा नायर
कक्षा बी.ए. द्वितीय वर्ष

बेटियाँ

अभिशाप नहीं
ईश्वर का वरदान है बेटियाँ
खुद अपनी पहचान बनाती
स्वयं सिद्धा है बेटियाँ।
ममता का पाठ पढ़ाती
प्रेम की प्रतिछाया है बेटियाँ
गाथाएं नयी रचती
संघर्ष का ज़ज़्बा है बेटियाँ।
घर को स्वर्ग बनाती है बेटियाँ
ईश्वर की अनुपम कृति है बेटियाँ
अमन चैन की सार्थकता है बेटियाँ
संस्कारों की धरोहर है बेटियाँ।
चुनौतियों से लड़ने का हौसला है बेटियाँ
देश का नाम विश्व में रौशन करती है बेटियाँ
अपने आत्म सम्मान की रक्षा में
तलवार की धार पर चलती है बेटियाँ।

कु. तृप्ति नायर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कविताएं

अनहद

डॉ. ऋचा ठाकुर (प्राध्यापक (नृत्य)

(1)

जीवन क्या है ...?
बस यूँ ही चलते जाना
या ... एक आस के सहारे,
कदम पर कदम ... बढ़ते जाना ...
जीवन .....
सांसों का घटना बढ़ना ही नहीं
बस यूँ ही किसी के साथ
सांस दर सांस ... जुड़ते जाना
जीवन कोई फलसफा नहीं
बस अपनी आत्मा से ...
किसी रूह को
हौले से छूकर ... गुजर जाना
जीवन ... जी लेना है ।

(2)

मानव जीवन संक्षिप्त सा,
पर वृक्ष का जीवन अनंत
झीनी झिलमिल चदरिया सा
जीवन रहस्य ... काश कभी समझ आता
क्यूं न हर वृक्ष बोधि बन जाता ।

(3)

मैं सर्जना हूँ
स्त्री हूँ
ईश्वर की निर्मिति
मानवों से उपजी...
कई बार छली
हर बार खिली
देशकाल से अवगुंठित
स्नेह राग से गुम्फित
सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड में विचरित
प्रकृति की धुरी
हाँ स्त्री हूँ ...
सर्जना हूँ

(4)

एक सुदंर रमणी
बादलों की ओट से
हौले-हौले ... जमीं पर उतर आई
रात स्याह थी
राहों में ... रोशनी के जुगुनु
जगमगा रहे थे
वह प्रकृति थी ...
रमणी स्वरूपा
कंठ उसके प्यासे थे
पर कहीं भी
अविरल जलधार नहीं
विहवल रमणी ने
सजल आँखों से
अपनी काया को, छलनी होते देखा ।
वहाँ हरियाली नहीं
जंगल नहीं
दिखे तो केवल
कंक्रीट के जंगल
वो रोशनी भी
जुगनुओं की नहीं थी...
प्रकृति प्यास से तड़पती रही ।
पर अब कहीं ...
अविरल जलधार नहीं

सर्जना की अभिव्यक्ति

प्रो. माण्डवी सिंह से डॉ.अम्बरीश त्रिपाठी की बातचीत

प्रो. माण्डवी सिंह कथक की ख्यात नृत्यांगना है वर्तमान में आप इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ में कुलपति पद पर सुशोभित हैं । शासकीय कन्या पी.जी. महाविद्यालय में आदि रंग कार्यशाला की मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. माण्डवी सिंह ने वर्तमान समय में युवाओं की समाज में रचनात्मक भूमिका और कला के सामाजिक सरोकरों पर बेबाक बात की ।

प्रश्न : प्रत्येक कलाएँ कुछ कहती हैं अपने समय से संवाद करती हैं अपनी परंपरा को मिथकों को व्यक्त करना चाहती हैं तो कथक क्या कहती है-

उत्तर : कथक तो अपने आप में कहानी है, कथा है। कथक की उत्पत्ति कथा कहने वालों से हुई है। कथक वाचक पौराणिक कथाओं को समाज में एक उद्देश्य के तहत कहते थे। कथाएं जो उपदेश दे समाज को ऐसी कथाओं का वे कथावाचन करते थे। अभी भी अयोध्या के आस-पास जो कथक है वो इस कथावाचन परंपरा से जुड़ी हुई हैं। शादी या अन्य किसी अवसर पर एक कपड़ा डालकर (इन कपड़ों का कई तरह से प्रयोग करते है) पौराणिक कथाओं को बहूत ही रोचक ढंग से कहते हैं साथ ही वे गाते भी हैं तथा नृत्य भी करते हैं तो कथक ही ऐसी शैली है जिसकी उत्पत्ति सीधे कथावाचन से हुई है। फिर धीरे-धीरे यह एक नृत्य के रूप में विकसित हो गया।

प्रश्न : कब शैली के रूप में या किनके शासन काल में और कौन सी सदी में ये नृत्य के रूप में विकसित हुआ?

उत्तर : इसका एकदम निश्चित प्रमाण तो नहीं मिलता पर लोग कहते हैं कि इसके (कथक के) अलग-अलग घराने हैं। जो जयपुर, लखनऊ और बनारस की अपनी अलग-अलग शैली है उनकी शैली अलग होने

के कारण ही वो घराने कहलाए। लखनऊ घराने के जो कलाकार हैं वे कहते हैं कि इसकी उत्पत्ति लखनऊ से हुई है लखनऊ में जो तहसील हैं ''हंडिया'' वहां से यह निकला है। पर जयपुर वाले भी अपना प्रमाण देते हैं कि जयपुर से इस नृत्य शैली की उत्पत्ति हुई है। पर निश्चित प्रमाण कहीं से मिलता नहीं हैं। वाजिद अली शाह के कार्यकाल में तथा उनके पहले भी आसीफुद्दौला हुआ करते थे उनके कार्यकाल में कथक के कुछ गुरु नियुक्त थे उन्हें राज्याश्रय तो मिला तब तक ये नाचने तो लगे थे, कथावाचन के साथ-साथ पर राज्यश्रय में ये हुआ कि ये कहा जाता है कि वे पर्शिया से डांसर्स को भी लाए थे तो उनका और यहां के लोक कलाकारों का आपस में आदान-प्रदान हुआ, ऐसा लखनऊ वाले कहते हैं पर चूंकि राजस्थान में लोकशैली बहुत विकसित रुप में है अभी भी आप यदि राजस्थान को देखेंगे तो वह शास्त्रोंके काफी निकट है तो इनका कहना है कि ये यह भी विकसित हुआ है। चूंकि राजस्थान में भी राजाश्रय इनको प्राप्त था तथा सवौई प्रताप सिंह जी के दरबार में ये थे पर ऐसा था कि लखनऊ में उनको थोड़ा freedom था।

प्रश्न : ये कहानी तो हिन्दू धर्म, घरों या पुराणों की ही रहती है और मुस्लिम शासकों ने इसे प्रश्रय दिया, बढ़ावा दिया तो ऐसा भी कोई प्रमाण मिलता है कि कथा में उन्होंने अपने पीर-औलिया या उनके कथाओं को कहने के लिए दबाव बनाया गया या उनकी कुछ चीजे आई हो?

उत्तर : यो ही प्रमाण मिलता है जरूर कि कलाकार जब मुगल शासन में आ गए, तो वे नवाबों या राजाओं के मोरंजन के लिए उसमें और चीजें जोड़ते गए मूलतः यह आध्यात्म से जुड़ा हुआ था वह श्रंगार प्रधान हो गया पर ये भी प्रमाण मिलता है कि वाजिदअली शाह खुद कृष्ण बनते थे और लोगों को शास्त्र की बातें....तात्पर्य ये कि Two way communicotion था। (दोनों तरफ से था) और ये कहना पूरी तरीके से सही नहीं होगा कि मुगल काल ये श्रृंगारिकता की ओर ज्यादा हो गया, श्रृंगारिकता का समावेश और वहाँ खूबसूरती भी मिली है उसको एक clasical Dance form के रूप में समृद्ध होने के जो चीजे उनकी जरूरत की थी वो भी उनको मिला। पर जो मूलतः ऐसे कलाकार थे परंपरागत कलाकार थे वो अपनी परंपरा को नहीं तोड़े वो उतने ही अच्छे से आध्यत्म के साथ जुड़े रहे पर जैसे वाजिदअली शाह के समयस आप जो कह रहे हो कि मुगल की चीजे, 2-4 चीजे आई। जैसे प्रवेश हुआ ''आमद'', एक 'आइटम' कहना चाहिए । आमद का अर्थ ही होता है प्रवेश करना, तो वो आया। और ऐसी 4-5 चीज़े हैं जैसे सलामी आ गई जो नमस्कार करते थे वहां वो सलाम भी करने लगे। और ठुमरी में आप कहीं ये नहीं देखेंगे। नदीम महाराज जो वाजिदअली शाह जी के दरबार में थे, ठुमरी में हर जगह उन्होंने नायक को कृष्ण के रूप में लिया है तो श्रृंगारिकता के साथ से जरूरी ये था कि ईश्वर भी वहां रहे तो कहीं न कहीं वो एक संतुलन बना हुआ था।

प्रश्न : जैसे विद्यापति की परंपरा थी जयदेव की वैसे ही ये इसमें भी चलती रही?

उत्तर : बिल्कुल चलती रही, और कृष्ण की लीलाओं को और कृष्ण को...

प्रश्न : एक तरह से श्रृंगार आकर्षण के लिए था और भक्ति परोसना था।

उत्तर : मूल तो भक्ति में ही था एक बार ना dd bharti में Interview आ रहा था रूक्मणई देवी अरूण्डेल का। तो उन्होंने इतनी बड़ी बात कही, शास्त्रीय नृत्य का भरतनाट्यम जो रूप दिया है उन्होंने ही दिया है, तो कहने लगी कि बिना भक्ति के यदि मैं इसकी (संगीत या नृत्य की) बात करूं तो श्रृंगार हो ही नहीं सकता। तो जो शास्त्रीय नृत्य के श्रृंगार की बात हम कर रहे न तो उसके मूल में भाक्ति ही है।

प्रश्न : बाद में रायगढ़ घराना और भी घराने विकसित हुए बनारस घराना भी है कथक में ?

उत्तर : हाँ बनारस तो पुराना ही चल रहा था कथक में भी। पर बनारस इतना पनप नहीं पाया लखनऊ और जयपुर के मुकाबले में...

प्रश्न : पर मूल अंतर क्या है? आम आदमी ये कैसे पहचाने कि ये कौन सी शैली है? कुछ मूलभूत भिन्नताएं है क्या?

उत्तर : बिल्कुल है, जो इसका मूल आधार होता है न, उनमें अंतर होता है। तो लखनऊ में नज़ाकत है बहुत समझ में आता है, ठुमरी की बात वहां ज्यादा होगी। जो dance है वो लक्ष्य प्रधान होगा। पर जयपुर का dance यदि दोनों dance form को आप देखेंगे न एक साथ तो बिल्कुल समझ में आ जाएगा। जो नृत्य से नहीं जुड़ा है वो भी पहचान लेगा। जहां जयपुर की बात है जयपुर में force है और भक्ति की ओर ज्यादा है। जैसे यहां ठुमरी ज्यादा है। तो वहां भजन ज्यादा है। और तेजी है तैयारी है जयपुर के पास और बनारस में दोनों को मिलाकर है।

प्रश्न : एक ही भजन पर दोनों ही घराने के लोग भिन्न नृत्य करते हैं?

उत्तर : करते हैं, पर कहीं न कहीं, ज्यादातर आज तो ऐसा हो गया है कि तुलसी भी कथक में है सूर भी है निराला भी और महादेवी वर्मा भी है। पर यदि हम परंपरा की बात करेंगे तो बिन्दादीन महाराज ने हजारों ठुमरियां लिखीं तो वो लखनऊ वाले ही करते है। पर हमेशा ये चलन रहा है कि जयपुर के कलाकार लखनऊ से सीखे हैं कुछ न कुछ और कलाकार पर अब ऐसा हो गया है कि लखनऊ वाले में भी, अब जो बिल्कुल घराने की जो बात है ना वो हटने लगी है घटने लगी है। और अब कुछ दिनों बाद मुझे लगता है पहचानना मुश्किल हो जाएगा। और जो रायगढ़ की बात कर रहे हैं अब तो घराने के रूप में वो भी सामने आ रहा है। और जो हम शुरुआत मे बात कर रहे थे कि कथा से ही कथक जुड़ा हुआ था। धीरे-धीरे ये हुआ कि वह कथा से थोड़ा विलुप्त होने लगा था। इसमें चक्कर ये हो गया कि या बस movenents की बात हो गई, कि वो सिर्फ खूबसूरती दिखाएँ, story कही न कहीं विलुप्त होने लगी। तो राजा चक्रधर सिंह जी को ये लगने लगा कि यदि ऐसा ही कथक होते रहा तो यह एक मशीन की तरह हो जाएगा । तो फिर से उन्होंने इसको कथा के साथ, विषय के साथ जोड़ने का प्रयास किया। ये राजा चक्रधर सिंह जी ने किया। और राजा चक्रधर सिंह ने ये भी किया कि जितने कलाकार चाहे वो लखनऊ के हो या जयपुर-बनारस के हो, सारे कलाकर उनके दरबार में थे। सभी जितने भी धुरंधर कलाकार थे सबको एक साथ रखा उन्होंने राजाश्रय दिया। और वो खुद भी कलाकर थे तो सबको साथ में मिलाकर जो उन्होंने ग्रंथों की रचना की, उन्होंने ढेरों हजारों पदों की रचना की, ऐसे गीतों की रचना की, ठुमरी की रचना की, भजन की, गज़ल की, तो उसमें ऐसा लगता है कि उसमें सारे घरानों का मिश्रण है।

प्रश्न : आपका किस घराने से ताल्लुक है?

उत्तर : मैं लखनऊ घराने से और चूंकि रायगढ़ छ.ग. का रहा है और मेरे गुरु जी ने रायगढ़ के ऊपर काम किया जो 1947 में राजा की मृत्यु हो गई जब वो 42 साल के थे। 1905 में ही उनका जन्म हुआ था अब सोचिए हमारे से कितने छोटे थे वो और इतने ग्रंथों की रचना की है इतने कलाकारों को बुलाया नई शैली का वहां विकास हुआ तो उनकी मृत्यु के बाद सर ने मुझे लगता है, 1983-84 में फिर से रायगढ़ के ऊपर Reserch करके रायगढ़ को फिर से लोगों के सामने दोबारा लाया अब तो Govt के level पर भी रायगढ़ में काफी काम हो रहा है चूंकि राजा तो ... अब देखिए उन्होंने सोचा कि कथा को तो वापस आना चाहिए हर नृत्य का एक meaning होना चाहिए ये नहीं की सिर्फ हाथ-पैर मार दिए, तो ये नृत्य, नृत्य नहीं होगा वो चाहते थे कि उनके हर एक movenents में कोई story हो बात हो कोई भावना हो और उन्होंने चाहे प्रकृति को लेकर या अपने जीवन के अलग-अलग गतिविधियों को लेकर कुछ उन्होंने लिखा।

प्रश्न : प्रकृति से याद आया मैम एक बार मुझे सौभाग्य मिला था बिरजू महराज का नृत्य देखने का दिल्ली में । वहां उन्होंने बताया था कि जो कथक या नृत्य है ये प्रकृति है। प्रकृति को हम अभिव्यक्त करते हैं हमारे माध्यम से । तो प्रकृति में परिवर्तन के साथ क्या नृत्य में भी परिवर्तन होता रहता है ? आपको क्या लगता है ये परंपरा जितनी तेजी से युवाओं के बीच में जानी चाहिए, उतनी अच्छी तेजी से पहुंच नहीं पा रही। उसके कारण?

उतर : हम ही समाज है, society हैं, मुझे लगता है इसका अच्छे से प्रचार प्रसार हो जैसे अभी बात हो रही थी कि 1800 विद्यार्थी यहां तो खैर ठीक है एक minor subject होगा पर जहां main विषय को लेकर 1800 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं तो मुझे लगता है ऐसी संस्थाओं को शासन के Level पर बहुत मदद मिलनी चाहिए क्योंकि जब भी हम बात करते हैं कि जब तक वो संगीत से नहीं जुड़ेगा, ललित कला से नहीं जुड़ेगा, तो वो संवेदनशील नहीं बनेगा और जो आज वर्तमान में बहुत बड़ी समस्या है । यदि वो संगीत को सिर्फ सुनता है, संगीत को समझता है जो मुझे लगता है कहीं न कहीं वो एकाग्र होगा । छोटा सा Example मैं आपको देना चाहुंगी मुझे लगता था जो हमारे गुरूजी जो रायगढ़ पर काम किये तो बताते थे कि लच्छू महाराज जी बिरजू महाराज जी के चाचा हैं तो वे एक कहानी बताते थे कि अच्छन महाराज जी (बिरजू महाराज जी के पिता) उनके कई बेटे पैदा हुए और खत्म हो जाते थे। practice के दौरान जब उनको कोई आ कर बताता था कि आपका बच्चा खत्म हो गया है तो वो रोने की एक्टींग करते थे फिर से practice शुरू। तो मुझे लगता था कहां तक ये सब Possible है। बताऊ, मैं तो कुछ भी नहीं हूँ एक अंश भी नहीं हूँ पर यदि हम अच्छे practice. साधना जो आज आप बात कह रहे थे न, ये तो जुड़ना पड़ेगा इसीलिए ये साधना शब्द है उसके लिए इस्तेमाल होता है । उस समय ऐसा लगता है कि चाहे वो कितना भी हमारे लिए बहूमूल्य क्यों न हो, चाहे तो हमारे लिए कितना भी प्रिय क्यों न हो वो बिल्कुल परमानंद क्यों कहा गया है उस आनंद को अलग क्यों कहा गया है इससे। वो आनंद इतना अच्छा होता है अपने आप के लिये उसमें डूबना

चाहता है कलाकार । ये कब ऐसी स्थिति आती है, मुझे नहीं पता, पर कुछ लोग कर रहे हैं ये।

प्रश्न : इसीलिए कहा जाता है नर्तक जब खो जाए तब नृत्य प्रारंभ होता है। तो अपना इसमें व्यक्तित्व खोना है?

उत्तर : अपने आप को खोना है? या अपने अहंकार का विगलित करना है। जैसे College की बात है Colleges में विषय तो खुल गया पर इसका जो वातावरण बहुत मायने रखता है किसी भी चीज के लिए वातावरण बहुत मायने रखता है इसके लिए जो वातावरण चाहिए वो नहीं बन पा रहा है। इसलिए मुझसे जब सुझाव मांगा गया ना तो मैंने यही कहा कि यदि आप सारे विषय विश्वविद्यालय में खोले तो, वो पूरे Setup के साथ खोले ताकि विद्यार्थियों की मुकम्मल समझ बने सके वे समझ सके।

अभिनय की एक किताब सात सुर, सात राग और 27 रागिनिया है। इसमें बिसमिल्ला खां का सबसे पहला Interview है वो यह कह रहे थे कि वो अपने चाचा या अपने किसी रिश्तेदार के घर पर रहते थे उनको अभ्यास कराते थे। अब रात में वो गंगा जी के पास रियाज़ करते थे घंटों और उनके जो मामू थे उन्होंने कहा कि तुम्हारे साथ एक दिन कुछ चमत्कार होगा पर तुम किसी को बताना नहीं। और उन्होंने बताया कि सचमुच में ऐसा हुआ कि एक फकीर मुझे दिखे वो आए मैं तो एकदम घाबरा गया था, आए और मुझे बोले कि तुम बहुत अच्छा कर रहे हो और तुमको वो मिल चुका है जिसकी तुम तलाश में हो। पर वो आकर अपने मामू को सब कुछ बता दिए कि मेरे साथ ऐसा हुआ। कहने का मतलब ये है कि हर जो महान कलाकार है ईश्वर के साथ उसका इतना अच्छा तादात्म्य है तभी वह कलाकार है खासकर विधाओं में। तभी तो कुछ कर पाता है।

प्रश्न : कलाओं के अंर्तसंबध पर क्या सोचती है आप?

उत्तर : बहुत गहरा संबंध है और इसलिए भी यह खैरागढ़ विश्वविद्यालय को खास बात है, जो भी कला हो चाहे वह चित्रकला, हो नृत्य कला हो या साहित्य कला यदि नर्तक साहित्य कला को नहीं जानता है यदि साहित्य के प्रति उसका प्यार नहीं है तो वह किसी भी danc form का कलाकार बन ही नहीं सकता। जब तक साहित्य व शब्दों को समझेगा नहीं उसकी भावनाओं, इस को नहीं समझेगा तो वह न तो कथककार हो सकता है न ही संगीतकार ।

प्रश्न : ये जो पश्चिमी विचारक है वे कहते हैं कि इतिहास की मृत्यु हो गई है ये इनकी साजिश है कि हमें इतिहास से अलग किया जा रहा है। हमारी परंपरा से काटने की कोशिश है।

उत्तर : आजकल के लोग ये कहते हैं कि Tradition को छोड़कर हटकर कुछ बताइए जबकि पंरपरा को आप छोड़ ही नहीं सकते, पर कुछ लोग ये बना रहे Western philosphy. उसमें से जरूरी नहीं है कि आप परंपरा को माने। Tradition के कारण ही आज भारतीय संस्कृति जिंदा है। बाहर से जो लोग भारत में आ रहे हैं वे इसी परंपरा के लिए आ रहे हैं Dance का चित्र से चित्र का गीत से बहुत गहरा संबंध है इस पर वो बहुत कुछ बोला जा सकता है। इसके बिना तो कुछ हो ही नहीं सकता। अगर Dancer painting करे महसूस ही नहीं करेगा तो ...यही बात खैरागढ़ वि.वि. में देखने को मिलती है वहां चित्रकला के विद्यार्थी घंटो बैठकर संगीत सुनते हैं उनको पता होता है कि कौन से कलाकार सही है कौन नहीं। उनके काम में झलकता है music वो लय की बात होती है painting में ।

खैरागढ़ वि.वि. द्वारा जब रजा साहब को डी.लिट् की उपाधि दी जा रही थी तब उन्होंने यहां की धूल को अपने माथे पर लगा लिया। वे धरती से जुड़े हुए व्यक्ति थे। .... बिरजू महाराज जी बहुत अच्छे चित्रकार Instrumat Player है उतने ही अच्छे dancer है। मैं उनको एक Complete कलाकार मानती हूँ।

प्रश्न : कलाओं की सामाजिक भूमिका के बारे में आप क्या सोचती है?

उत्तर : मुझे लगता है कलाकार जितने अच्छे से समाज के साथ जुड़ सकता है अपने दायित्वों को निभा सकता है। आज मैंने देखा आज के सामाजिक विषय है उनमें जो बुराईयां है, कलाकार उसे दूर करने का संदेश दे सकते हैं, आज स्वच्छता के ऊपर पेंटिंग बनाई गई उसमें एक विद्यार्थी द्वारा बनाई गई पेंटिंग बहुत अच्छी भी उसमें सृजनात्मकता दिखाई दे रही है ये व्यक्ति के Brain को दर्शा रहा हैं कि किस प्रकार से स्वच्छता रखनी है । तो वे एक कलाकार ही कर सकता है मुझे लगता है यह बुद्धिजीवियों को अच्छी तरह से प्रभावित कर सकता है। आज समाज में जो जरूरत है ऐसे विषयों को लेकर भी कलाकार काम कर रहे हैं। यदि हम ऐसे ही परंपरा के साथ समसामयिक विषयों को लेकर आगे बढ़ते हैं तो मुझे लगता है कि यह समाज के लिए बहुत अच्छा होगा ।

000

परिचर्चा

छत्तीसगढ़िया सब ले बढ़िया

कु. तृप्ति नायर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

विभिन्न संवेदनशील मुद्दों पर छात्राओं के मौलिक विचार, उनकी समझ जानने अभिव्यक्ति कौशल विकसित करने के उद्देश्य के क्रम में 'छत्तीसगढ़या सबले बढ़िया' तथा 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी' विषय पर खुली परिचर्चा का आयोजन किया गया । इस पचिचर्चा में 16 छात्राओं ने अपने विचार व्यक्ति किये । इनमें से दोनों ही विषयों पर चुनिंदा लेखों को ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है ।

प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक हमारा भारत देश पूरे विश्व में जगतगुरु का दर्जा प्राप्त करता हुआ आ रहा है। हमारे भारत देश में हमेशा से ही नारियों ने पुरुषों के साथ बराबर का योगदान दिया है। आज नारी की स्थिति पहले से काफी बेहतर है। आज नारी की स्थिति को कहीं से भी दयनीय या सोचनीय मानना सही नहीं है।

हमारे देश में ऐसी कई विदुषी नारियाँ हुई है , जैसे - अनुसूया, गार्गी जिन्होंने प्राचीनकाल में अपने ज्ञान के माध्यम से जहां पूरे समाज को प्रभावित किया था वहीं हमारे देश की पहली महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल हमारे देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जिनको 'लौह महिला' की उपाधि दी गई है। एवं समाज सेवा की प्रतिमूर्ति शांति के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार और भारत रत्न प्राप्त मदर टेरेसा ने पूरे देश में नारी की स्थिति को उच्चतम शिखर तक पहुंचाया है।

दूसरी ओर यदि हम छत्तीसगढ़ी लोगों को संस्कृति एवं सभ्यता की बात करें तो इनमें सुप्रसिद्ध सुआ नृत्य, पंथी नृत्य एवं छत्तीसगढ़ी गीत-संगीत एवं छत्तीसगढ़ी फिल्में शामिल हैं। जिनमें छत्तीसगढ़ी सभ्यता एवं संस्कृति तथा हमारे देश प्रदेश के पर्यटन को दिखाया जाता है। छत्तीसगढ़ियों का एक विशेष गुण यह भी है कि उमें स्वाभाविकता सहनशीलता भोलापन एवं आपसी भाईचारे की भावना भी पूर्ण रूप से विद्यमान है। हमारे प्रदेश की माटी में संस्कृति और अध्यात्म के रंग भी है।

छत्तीसगढ़ प्रांत का गौरव कहे जाने वा भिलाई इस्पात संयंत्र में प्रतिदिन हजारों श्रमिक आपस में एक जुट होकर रेल पातों का निर्माण कर देश की राष्ट्रीय आय को बढ़ाने में निरंतर अपना अमूल्य योगदान देते है? यह उनके 'संगठन की शक्ति'का ही परिणाम है कि उन्होंने रेल पांतों का निर्माण करके विश्व रिकॉर्ड तक बनाया है। जो हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है। छत्तीसगढ़ माटी की एक और विशेषता यह भी है कि यहाँ पर जन्म लेने वाला प्रत्येक नागरिक चाहे वो बंगाली हो मराठी हो, गुजराती हो या अन्य किसी समुदाय का हो वह स्वयं को इस मिट्टी से जुड़ा हुआ ही महसूस करता है। छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों का विशेष महत्व हैं जिन्होंने न सिर्फ भारत देश में अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारत का नाम रोशन किया है। जिनमें पंडवानी

गायिका श्रीमती तीजन बाई एवं श्रीमती ऋतु वर्मा के नाम शामिल है। जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं लोकगीतों का लोहा मनवाया है। जिसके लिए आदरणीय तीजन बाई जी को 'पदमश्री' एवं 'पद्मभूषण' सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। दूसरी ओर लोक वाद्यों का संग्रह कर उन्हनें जगह-जगह पहचान दिलाने वाले रिखी क्षत्रिय जी एवं लेखन कला के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ी उपन्यासकार परदेसी राम वर्मा जी जैसे असंख्य प्रतिभाओं ने हमारे प्रदेश का नाम विश्वस्तर पर रोशन किया है।

छत्तीसगढ़ी संस्कृति की बात हो रही हो हम छत्तीसगढ़ी त्योहारों तथा छत्तीसगढ़ी व्यंजनों को कैसे भूल सकते हैं। छत्तीसगढ़ी त्योहारों का अपना महत्व है जिनमें गोवर्धन पूजा, तीजा, हरेली महोत्सव, पोला महोत्सव एवं तुलसी विवाह आदि सम्मिलित है। जो हमें हमारी संस्कृति से जुड़ने का एक अवसर प्रदान करती है। छत्तीसगढ़ी व्यंजनों की बात करें तो इनमें है चावल के आटे का चीला, फर्रा, मोटी रोटी, चौसेला, अनारसा, ठेठरी और खुरमी जो हम सभी के घरों में शुभ अवसरों पर बनाए जाते हैं।

अब मैं हमारे प्रदेश की कुछ मूलभूत चुनौतियों का वर्णन कर रहीं हूँ। विगत कुछ वर्षों में छत्तीसगढ़ प्रांत के माथे पर नक्सलवाद की समस्या एवं कलंक की तरह उभरी है। नक्सलवाद ने हमारे प्रांत की शांति और सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया है ।दूसरी ओर वैश्वीकरण और बढ़ते बाजारवाद के कारण छत्तीसगढ़ी हस्त शिल्प, माटी शिल्प और लोक कलाकारों की रोजी रोटी छीनी जा रही है। साथ ही पाश्चात्य या पश्चिमी देशों से आई संस्कृति ने हमारे प्रांत की सभ्यता एवं संस्कृति पर गहरा प्रहार किया हैं। केवल संस्कृति ही नहीं हमारा खान-पान एवं वेशभूषा भी आज पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंग चुका है। बालीवुड फिल्मों एवं बॉलीवुड गानों ने युवा पीढ़ी के एवं मस्तिष्क में अपना विशेष प्रभाव डाला है जिससे आज की युवा पीढ़ी छत्तीसगढ़ी फिल्मों से दूर होती जा रहा है। जो हमारी संस्कृति के पतन का एक मूलभूत कारण हैं। साथ ही भ्रष्टाचार जैसी सामाजिक बुराई ने आज यहाँ के लोगों के मन की सात्विकता, ईमानदारी एवं सादगी को छिन्न-भिन्न कर दिया है। आलीशान रहन-सहन, लालच और स्वयं के हित को साधने की चाह में आज लोग अहंकारी एवं निष्ठुर बन गए हैं।

'प्रतिभा पलायन' हमारे प्रदेश की एक और मूलभूत समस्या के रूप में उभरी हैं। पहला प्रतिभा पलायन हैं उन परिश्रमी छत्तीसगढ़ मजदूर वर्ग का जिन्होंने अथक परिश्रम करने के बावजूद भी उचित वेतन नहीं मिल पाता जिसके कारण वे अन्य प्रांतों में पलायन करने को मजबूर हो जाते हैं। दूसरा प्रतिभा पलायन है यहाँ की पढ़ी लिखी युवा पीढ़ी का। आज हमारा भिलाई नगर 'एजुकेशन हब' के नाम से जाना जाता है। किन्तु यहाँ की युवा पीढ़ी यहाँ की शिक्षा ग्रहण करने के बाद विदेशों में नौकरी करने को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझते है। एक नए समाज का निर्माण केवल युवाओं द्वारा ही संभव है। यदि हमारी शिक्षित युवा पीढ़ी अन्य देशों में जाकर वहाँ की अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगी तो हम कैसे विकासशील देशों की श्रेणी से निकलकर विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होंगे?

हमारे प्रदेश में महिलाओं की स्थिति में सुधारने करने की विशेष आवश्यकता है। चाहे वो शिक्षा स्वास्थ्य स्वच्छता एवं जनजागरूकता आदि के क्षेत्र में हो। अंध विश्वास हमारे प्रांत की एक कठोर चुनौती हैं। यहाँ आज भी कई गांवों में महिलाओं को टोन्ही एवं डायन कहकर उन्हें प्रताड़ित किया जाता हैं। उनका अपमान व उन्हें समाज से या गांव से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इसके रोकथाम के लिए जन-जागृति की विशेष आवश्यकता है। आज भी कई गावों में किसी के बीमार होने पर उसे तत्कालीन डॉक्टरी चिकित्सा की अपेक्षा ओझा एवं बइगा के पास ले जाया जाता है। इलाज में हुई देरी के कारण कई लोगों ने अपने प्राण त्याग दिए।

दूसरी ओर हमारे प्रदेश में मादक पदार्थो की बिक्री पर रोक लगने की आवश्यकता है। आपराधिक घटनाओं के लिए शराब जिम्मेदार है। बच्चियों एवं महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध भी हमारे प्रदेश एवं देश के मान-सम्मान को नुकसान पहुंचा रही है।

अब मैं 'छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग' के बारे में बताना चाहूँगी जो विगत 5-6 वर्षो से यह प्रयास कर रहा है कि छत्तीसगढ़ी बोली को एक भाषा दर्जा प्राप्त हो। परंतु अब तक यह प्रयास सफल नहीं हो पाया है। इसके लिए अत्यंत आवश्यक हैं कि छत्तीसगढ़ी बोली की एक सुनिश्चित व्याकरण विकसित की जाए जो सर्वमान्य हो। जिससे छत्तीसगढ़ी एक भाषा का रूप ले सके। ताकि प्राथमिक शाला से ही बच्चों को छत्तीसगढ़ी भाषा का ज्ञान हो। हमें अपनी संस्कृति का पूर्ण ज्ञान केवल तभी होगा जब हमें अपनी भाषा का ज्ञान होगा।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। हमारे प्रदेश की कई विशेषताएं हैं तो कई सामाजिक बुराइयाँ भी हैं। जब तक हमारे प्रदेश से इन बुराईयों का अंत नहीं हो जाता तब तक 'छत्तीसगढ़ियाँ सब ले बढ़िया' कहना पूर्णतया सार्थक नहीं होगा। छत्तीसगढ़ियों को अपनी वही पहचान हासिल करनी होगी। पाश्चात्य संस्कृति का त्याग कर उन्हें अपनी संस्कृति खान-पान वेशभूषा तीज-त्यौहार, रहन-सहन तथा कला के प्रति सम्मान की भावना जाग्रत करनी होगी। उन्हें अपने छत्तीसगढ़ी होने पर गर्व करना होगा केवल तभी छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण का स्वप्न देखने वाले डॉ. खूबचंद बघेल जी के जीवन का यह उद्देश्य सार्थक हो सकेगा कि ''छत्तीसगढ़याँ सब ले बढ़ियां''

(2)

''छत्तीसगढ़ सबले बढ़िया'' ये एक ऐसा वाक्य है जो छत्तीसगढ़ के लोग बड़ी शान से कहते हैं । ये लोकोक्तियाँ यूँ ही नहीं पैदा हो गई बल्कि इसे जीवित करती है छत्तीसगढ़ की कुछ ऐसी बातें जो छत्तीसगढ़ी संस्कृति के मूल में है ।

1. अगर बिलासपुर से धमतरी के बीच का हिस्सा छोड़ दे तो छ.ग. भौतिक रूप से कुछ ऊँचाई परहै । मैकाल पर्वत श्रृंखला और दण्डकारण्य में स्थित अमृत धारा, चित्रकूट, दूधधारा जल प्रपात जैसे स्वर्ग में अमृत ।

2. छ.ग. जितनी तेजी से उन्नति के पथ पर आगे बढ़ रहा है, उतनी ही कुशलतापूर्वक संस्कृति को भी संरक्षित कर रहा है । जगदलपुर में लगने वाला संजय बाजार इसका बेहरतीन उदाहरण है, जहाँ स्थानीय जनजाति वस्तु-विनिमय कर अपना जीवन यापन करते हैं ।

3. छ.ग. की बोली, छत्तीसगढ़ी इतनी मीठी है और यहाँ के लोगों में भी मिठास और सबके लिये स्वीकृति है । यहाँ इतनी विभिन्नता है, अनेको धर्म, अनेको जाति लेकिन फिर भी यह प्रदेश शान्त और जीवन्त प्रदेश के रूप में उभर के आया है ।

4. छ.ग. के ऐतिहासिक धरोहर हमें एक पल के लिये अतीत में ले जाते हैं । लाल पत्थरों को तराश के बनाया हुआ लक्ष्मण मन्दिर और भोरम देव इसका बेहतरीन उदाहरण है ।

उपरोक्त चीजों के साथ छ.ग. को एक बेहतर प्रदेश बनाती है छ.ग. राज्य सरकार द्वारा लागू जनकल्याणकारी योजनाएं जैसे उज्जवलता योजना और-सुजला योजना, स्वास्थ्य सुरक्षा योजना, ज्ञान प्रोत्साहन योजना । ये सारी योजनाएं छ.ग. नामक गाड़ी में ग्रीस की तरह हैं जो जिन्दगी को बेहतर बनाती है ।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि -

यू ही नहीं बन जाती है लोकोक्ति जीवन से उनका है लेना-देना ।
छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया सबका यही है कहना ।

जुबैदा बेगम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

(3)

छत्तीसगढ़ सबले बढ़िया नामक पंक्ति अपने आप में परिपूर्ण है । इस पंक्ति से पूरे छत्तीसगढ़ का दर्शन हो जाता है ।

छत्तीसगढ़िया, सबले बढ़ियां हैं, क्योंकि छत्तीसगढ़ी भाषा जितनी सरल और सुबोध हैं, उतनी ही यहाँ रहने वाले लोग भी सुहृदय और भोले-भाले हैं ।

यहाँ के इंसानों का भोला मन और सुन्दर चरित्र ही छत्तीसगढ़ को सबले बढ़ियाँ बनाता है। छत्तीसगढ़ के कई लोगों ने देश में तथा अन्य देशों में जाकर छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया है ।

मैं भी अपने छत्तीसगढ़ का नाम रोशन करना चाहती हूँ । लेकिन कुछ चुनौतियाँ हैं, जो रूकावट डाल रही । जैसे : (1) भाषा की चुनौती, जिसमें हमें अपने छत्तीसगढ़ी भाषा के साथ दूसरे देशों में उनकी भाषा से अपनी बात, उन तक पहुँचा पाएंगे ।

2. अपना छत्तीसगढ़ तभी, उन्नति करेगा, जब अन्य देशों में भी अपना धाक जमाना होगा । अतः हमें अपने छत्तीसगढ़ के उन्नति हेतु चारों ओर अपने कल्चर (संस्कृति) को फैलाए, जिससे यह दुनिया में फैले।

छत्तीसगढ़ के लोगों में उदारता, नेक भावना तथा सहनशीलता होती है, जो एक इंसान का दूसरे इंसान से तथा एक परिवार को, दूसरे परिवार से तथा एक समाज को दूसरे समाज से जोड़े रखता है, अतः प्रेम, स्नेह भावना बनाएं रखता है ।

छत्तीसगढ़ियाँ, सबले बढ़ियाँ तो हैं ही लेकिन इस गौरव को हम आज कल के युवाओं को बनाएँ रखना है। और अपने छत्तीसगढ़ को उन्नति के शिखर पर पहुँचाना है ।

ताकि सारी दुनिया अपने छत्तीसगढ़ के बारे में जाने । यहाँ की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जाने ।

और मैं भी अपने छ.ग. को बढ़िया बनाने में अपना योगदान जरूर दूँगी ।

जय भारत, जय छत्तीसगढ़।

धनेश्वरी साहू
बी.एससी. तृतीय

परिचर्चा
अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी

1.

मैथिली शरण गुप्त जी की रचना अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, ''आँचल में दूध और आँखों में पानी'' को लेकर आज सबला नारी पर एक व्यंग्य।

मैथिली जी कहते हैं कि आज उस अबला का अब नया रूप देख लो, आँचल कहा उड़ गया हवा में उसका, नया स्वरूप देख लो, आपकी वो अबला अब नयी-नयी रोज अखबारों व समाचारों की खबरे बन रही है । उसके उठने-बैठने का तरीका, चलने फिरने का तरीका, लिख रहा है ।

नारी ही तो समाज की निर्माता है, उसका दिया हुआ संस्कार ही तो बच्चों में आता है अर अच्चे संस्कार दो से बच्चों में भी अच्छे ही संस्कार आते हैं और ये बच्चे वो बच्चे ही है जो समाज का निर्माण करते है, इन्हीं कारण ही तो भारत को सदैव अलग पहचान दी है ।

हे, नारी हमने माना आप बहुत समझदार हो,
ये भी हमने जाना आप आजादी की हकदार हो
ये जो कि समाज पर बहुत ही भारी पड़ रही है,
समाज के लिए नुकसान साबित हो रही है ।

हे नारी! तुमको लज्जा नहीं आती अपना शोषण देखकर, तुम तो मर्यादा, शालीनता, की जान थी, आदर्श संस्कृति की पहचान थी, पूरे भारत की शान थी ।

आज नारी जिस स्थिति में है उसे उस स्थिति तक पहुँचााय किसने? मैंने, आपने और इस समाज ने क्योंकि नारी को नारी हमने बनाया ।

अबला निरीह हमने बनाया है ....

जब एक बच्चा जन्म लेता है तब उसे खुद पता नहीं होता कि वह क्या है ।

चारों दिशाओं को अब नारी शक्ति की गूँज से गूँजना होगा
ये नारी ही है ये नारी, जो अब नर पर भी है भारी .....।

मध्य काल में ही नारी जाति की विकट स्थिति को देखकर कई कवियों ने नारी का चित्रण भी दरिद्र एवं दुखी रूप में किया गया है। इसका प्रमुख कारण वेदों के ज्ञान का प्रचार प्रसार न होना था । धन्य है स्वामी दयानंद जी का जिनके प्रताप से नारी जाति में शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ जिसके फलस्वरूप आज नारी भी पुरुषों के साथ कंधा मिलाकर चल रही है ।

नारी तेरी यही कहानी टूटती है, बिखरती है, खुद को समेटती है, अपने कल से लड़ती है, अपने आज को संवारती है, अपने अस्तित्व की तलाश में तू निरंतर चलती जाती है, तू माँ है, बहन है, पत्नी है, बुआ है, मौसी है, भाभी है, फिर भी तेरी यही कहानी है। फिर भी तो संघर्ष करती है, स्वयं के तलाश में निकलना जारी है और अपना एक नया रूप निर्धारित करती है, नारी तेरी यही कहानी है ...

''अब अपनी एक नयी पहचान तुझे बनानी है।''

आजादी के दौर में यह कहानी बहुत कुछ बदल गई । देश की महिलाएँ, साँतवे आसमान में देश का झंडा गाढ़कर कल्पना चावला बन रही है । किन्तु ऐसी भी अभी तक लाखों है, जो गर्भ में ही कत्ल कर दी जाती है । दहेज की बलि वेदी पर जिंदा ही जला दिये जाती है। करोड़ो ऐसे लोग है, जो स्कूल तक नहीं जा पाती है। बाल मजदूरी करने के लिए मजबूर है ।

औरत संसार की किस्मत है,
फिर भी तकदीर ही हठी है,
अवतार पैगंबर जनती है,
फिर भी शैतान की बेटी है।
नारी को अबला मत कहना, नारी बल की खान,
नारी को अबला कहना ये, नारी का है अपमान ।
बहुत सह चुकी जुल्म नारियाँ, और नहीं सहना है ।
घर के बाहर पैर रखा है, कमरे में नहीं रहना है
स्वंय कमाएगी अब नारी, ये नारी का ऐलान है।।
नारी को अबला मत कहना, नारी बल की खान है ।

कु. पूजा साहू
बी.एससी. द्वितीय वर्ष(गणित)

2

0 बेटी इस संसार की एक अमूल्य पुष्प है जिससे यह वसुंधरा सजी संवरी हुई दिखाई देती है। जिससे सारा संसार महकता है। नारी की विशेष गुण नम्रता लज्जा और मर्यादा है जो भारतीय नारी को गौरव व शक्तिशाली बनाती है।

0 नारी जो सहनशक्ति की खान है ममत्व कूट-कूट कर भरा है। इसलिए वो सारा जीवन हर एक से छली जाती हैं.... कभी पिता से भाई से पति से और कुछ समय बाद बेटे से....

0 देखा जाए तो नारी प्राचीन काल से स्वतंत्र है उनमें विशेष कौशल है-

0 वैदिक काल :- मनु ने कहा है - 'यत्र नार्यास्तु पूज्यते रमते तत्र देवता' अर्थात जहां नारियों की पूजा होती है वह देवता निवास करते हैं। इस काल में धार्मिक अनुष्ठान में नारी की उपस्थिति आवश्यक मानी जाती थी। नारी की गणना कवियों से होती थी।

0 **प्राचीन काल** :- इस काल में नारी रणभूमि में जौहर दिखाया करती है। जैसे पद्मावती, दुर्गवती व 1857 की क्रांतिकारी रानी लक्ष्मी बाई को कौन भूल सकता है।

0 वर्तमान समय में : आज की नारी हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम फहरा रही है और अपनी क्षमता बुद्धिमता और उत्साह का परिचय दिया है। फिल्म संगीत में लता मंगेशकर, ओलंपिक स्पर्धाओं में उड़नपरी पी.टी उषा, कर्णम मल्लेश्वरी, पी.वी. सिंधु, सनिया मिर्जा आदि। राजनीति क्षेत्र में सरोजनी नायडू, इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मंत्री थी। प्रतिभा सिंह पाटिल भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनी।

0 परंतु आधुनिक नारी पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगती जा रही है । भारतीय नारी तितली बनके उड़ रही है वह अपने परिवारिक कर्तव्य से दूर होती जा रही है।

3

ममता की प्यारी गोद। किसे याद नहीं?
बेटी का लाड़ और पत्नी का स्नेह
माँ का आर्शीवाद किसे याद नहीं?
नन्ही बेटी को जीवन का वर दो!

शिक्षा का सौभाग्य उसे दो,
बराबर के अधिकार उसे दो
जीवन में सम्मान उसे दो।
आखिर बेटी है किससे कम?

गांव की सरपंच रही,
कामयाब राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री रही,
ऐस्ट्रोनॉट, डॉक्टर, प्रोफेसर बनी,
उद्योगपति पायलट, इंजीनियर बनी,
विज्ञान में भक्ति में, साहित्य और कला में,
शोहरत है हासिल उसे हर क्षेत्र में।

हत्या क्यों करते हैं गर्भ में उसकी,
चीख अनसुनी क्यों करते हैं मासूम की?

बदलो ! सोच अपनी तुम बदलो।
बदलो ! समाज की कुरीतियां मान्यताएं बदलो।
जागो ! सुनो अपनी आत्मा की आवाज सुनो।
बनो निर्भय भरोसा प्रभु का करो।
उसकी नज़रो में सच्चे इंसान तो बनो।

जब एक है परमात्मा और आत्मा उसका अंश है,
तो भेद स्त्री पुरुष में हमने क्यों किया है ?
नन्हीं बेटो को जीवन का वर दो!

अनीता साहू बीएससी भाग-2(बायो)

4.

जीवन दात्री, मैं जननी मैं माई
उपजे मुझसे बलशाली
फिर मैं अबला क्यों कहलायी

मैं तुलसी मैं शक्तिरूपा
कैसी विडम्बना कैसा अजूबा है भाई
शक्तिरूपी नारी की शक्ति है, किसने अधिकाई
शूर-वीर मैं वीरांगना
क्यों अबला कहलाई?
मैं आंगन की तुलसी
बन अन्नपूर्णा तुम्हारे घर में समायी
कही मातरूप, कहीं पत्नी,
कहीं पुत्री बनके आयी
कल्पना बनके चाँद पर चढ़ आई
फिर मैं अबला क्यों कहलाई

तुम पर खुले आसमान, पर मेरे पैरों में क्यों बेड़ी लगायी
कुछ करने की चाह है मुझको,
तुम्हें क्यों न भायी
उड़ने दो अंबर में मुझको, नई सोच जो छायी
अब न रहूँगी मैं अबला
मैं शक्ति कहलायी ।।

सरस्वती डहरे
बी.एससी. द्वितीय वर्ष(गणित)

5.

हुआ बेटा तो ढ़ोल बजाया,
हुई बेटी तो मातम छाया।
नन्हीं बेटी को जीवन का वर दो।

हत्या क्यों करते है गर्भ में उसकी
चीख अनसूनी क्यों करते हैं मासूम की,
आखिर दोष उसका है क्या?
फर्क बेटी बेटे में हमने ही किया है।

हुआ बेटा तो ढ़ोल बजाया हुई बेटी तो मातम छाया ।
ऐसा क्यूं करते हैं हम?
क्यों बेटी को दर्द हमने इतना दिया है,
प्रभु के उपहार को क्यों ठुकरा दिया है।
क्यों दो घरों की रौशनी को सिसका दिया है,
बेशर्मी से बेटी का सौदा किया है,
दहेज के हाट पर उसे बेच दिया है,
मालिक का खौफ और कानून का डर,
धन के लोभ ने सब भुला दिया है।

नन्हीं बेटी को जीवन का वर दो!
जगतजननी है वो प्रेम की शक्ति है वो,
शीतल छाया है परिवार की आत्मा है वो।

दिव्या जांगड़े बीएससी -2 (बायो)

6.

हमारा छत्तीसगढ़ प्रांत 'धान का कटोरा' के नाम से जाना जाता है । हमारे प्रांत को यह सम्मान दिलवाने में छत्तीसगढ़ी किसानों एवं श्रमिकों का अमूल्य योगदान रहा है । जिसके कारण हमारा प्रांत स्वच्छ एवं हराभरा दिखाई देता है । छत्तीसगढ़ी लोगों ने मिलकर एक ऐसे सच्चे समाज की स्थापना की है जहाँ लोगों में सतत् परिश्रम करने की भावना रही हैं । हमारा प्रदेश सदैव अहिंसा का समर्थक और शांति का पोषक रहा है । छत्तीसगढ़ वासियों में धर्म, भाषा, प्रांत आदि का भेदभाव कभी इतना प्रबल नहीं रहा कि यहाँ के लोग आंदोलन और आतंक जैसी घिनौनी और अमानवीय घटनाओं को अपना आदर्श मानें । समाजिक सद्भावना एवं एकता की दृष्टि से हमारा प्रदेश, पूरे देश में एक आदर्श राज्य के रूप में जाना जाता है । छत्तसीगढ़वासियों में शिक्षा, समृद्धि, समानता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमेशा से केन्द्र में रहा है । मैंने यह देखा है कि छत्तसीगढ़ियों में आपसी प्रेम आदर-सत्कार, त्याग, समर्पण, अखंड परिश्रम और सहयोग की भावना पूर्ण रूप से विद्यमान रहती है । (मेरी स्कूली शिक्षा बी.एस.पी. स्कूल में हुई है, जहाँ मेरी कई छत्तीसगढ़ी सहेलियाँ बनीं । जिनसे मुझे छत्तसीगढ़ी समाज की संस्कृति तथा उनके आचार-विचार के सम्बन्ध में कई बातें जानने एवं सीखने को मिली ।

नारी ने अपनी प्रतिभा का परिचम हमेशा ही लहराया है। खेल के क्षेत्र में सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, पी.टी.उषा । यहाँ तक कि महिला पहलवानी के क्षेत्र में फोगाट बहनों ने अपने दमखम का परिचय दिया है । ओलम्पिक के क्षेत्र में तक हमारी भारतीय नारियों ने अपना स्थान बनाया है, जिनमें हमारे देश की महिला मुक्केबाज एम.सी. मैरीकॉम का नाम शामिल है, जिन्होंने पाँच स्वर्ण पदक भारत को दिलाया है साथ ही वह पाँच बार की विश्व चैम्पियन भी रह चुकी हैं एवं हमारे देश की महिला बैडमिंटन खिलाड़ी पी.वी. सिंधु ने रजत पदक हासिल करके भारतदेश को गौरवन्वित महसूस करवाया है ।

अशिक्षा और घूंघट की आड़ में नारी की स्थिति को पंगु बनाकर रखने से समाज का ही नुकसान होगा । आज की नारी अपने घर की दहलीज़ से बाहर निकलकर मिस यूनिवर्स जैसी अंतराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में बाग ले रही हैं साथ ही विजयी हो रही है । हमारे देश की पहली मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन, लारा दत्ता, मिस वर्ल्ड ऐश्वर्या राय, प्रियंका चोपड़ा और वर्ष 2017 में मिस वर्ल्ड बनी मानुषी छिल्लर जो कि एक मेडिकल की छात्रा और कुचिपुड़ि नृत्यांगना है, ने यह साबित किया है कि नारी में अगर बुद्धि है तो सौन्दर्य के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने की योग्यता भी है ।

एक त्रासदी ही है कि टी.वी. सिनेमा, इंटरनेट ने आज पश्चिमी सभ्यता, जीवन शैली को घर-घर तक पहुँचा दिया है । आज नारियों की स्थिति फिर सोचनीय होती जा रही है । मॉडलिंग, फिल्म और विज्ञापनों में उसे छोटे कपड़ों में दिखाया जाता है । युवा पीढ़ी को भटकने का कार्य हमारी बॉलीवुड एवं पश्चिमी देशों की हॉलीवुड फिल्में ही करती हैं । ऐसी चकाचौंध भरी दुनिया में नारी के स्वरूप को अश्लीलता की प्रतिमूर्ति मान लिया जाता है ।

महिलाएं अबला नहीं होती । महिलाओं में भी साहस, स्वाभिमान, सेवाभाव तथा ईश्वर के प्रति आस्था होती है । झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने परतंत्र भारत में अंग्रेजों से लोहा लिया परन्तु मरते दम तक अपनी झाँसी नहीं दी । भारत रत्न पुरस्कार प्राप्त अरूणा आसफ अली ने भारत छोड़ों आंदोलन में क्रांतिकारी महिला के रूप में सक्रिय भूमिका निभाई जिनके साहस से आज हम सभी परिचित हैं ।

नारी को अबला देवी कहकर हम उन्हें धैर्य और संयम की शिक्षा तो देते हैं मगर यह भूल जाते हैं कि नारी का एक स्वरूप शक्ति का भी है । नारी माँ होती है, एक माँ का पद सबसे स्मानजनक पद होत हैै । नारी सृष्टि की रचनाकार होती है । नारी अगर मातृसत्त के रूप में संतान को जन्मना दे, उनका पालन-पोषण और उन्हें योग्य ना बनाए तो सृष्टि का यह क्रम ही रूक जाएगा । हम अपने हिन्दू देवी-देवताओं की कितनी उपासना करते हैं, उनसे प्रार्थनाएँ करते हैं, मगर क्यों हम अपने घर की नारी, माँ, बेटी, बहू की इज्जत नहीं करते । नारी यदि अपनी पहचान को गढ़ने में कलम उठा सकीत है तो वह अपनी आत्मरक्षा में तलवार तक उठाने की क्षमता रखती है ।

हमारे हिन्दी साहित्य जगत के साहित्यकार जयशंकर प्रसाद जी लिखते हैं कि - 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग-पग तल में पीयुष स्त्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में ।'
इन पंक्तियों में प्रसाद जी ने नारी के प्रति सम्मान व्यक्त किया है ।

माउंट एवरेस्ट की चोटी तक पहुँचकर बछेन्द्रीपाल, संतोष यादव और विकलांग होते हुए भी अरूणिमा सिन्हा ने जिस साहस का परिचय दिया है वह श्रद्धेय है । हमारे देश में कल्पना चावला अंतरिक्ष तक पहुँचने वाली पहली भारतीय नारी थीं ।

आज आई ए.एस. पुलिस सेवा आई.आई.टी चिकित्सा, प्रबंधन सभी

क्षेत्रों में नारी पुरुषों से आगे है। इंदिरा नूयी ने व्यवसाय और प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई हैं। बैंकिंग के क्षेत्र में आई.सी.आई बैंक की सी.ई.ओ. चंदा कोचर, एस.बी.आई. की अरून्धिती भट्टाचार्य ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। राजनीति के क्षेत्र में हमारे देश की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, सोनिया गांधी, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

गायन के क्षेत्र में भारतरत्न पुरस्कार विजेता सुब्ब लक्ष्मी, लता मंगेशकर का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज है। हमारे देश की प्रथम महिला आई.पी.एस पुलिस अफसर किरण बेदी भी हमारी आदर्श हैं। स्कूली शिक्षा और महाविद्यालयों में शिक्षा का अधिकांश दायित्व महिला शिक्षिकाओं पर ही होता है।

आज सबसे अधिक आवश्यकता है कि नारी को शिक्षित बनाया जाए उस, उसके अधिकारों के प्रति, भारतीय संविधान और कानून की जानकारी दी जाए। राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका तभी असरकारी होगी। आज नारी सभी क्षेत्रों में बराबर भूमिका का निर्वाह कर रही है। जहाँ नारी एक गृहणी है वहीं उसे बाहर निकलकर ऑफिस इत्यादि में एक कामकाजी महिला के रूप में अपनी भूमिका निभानी पड़ती है। आज नारी को परिवार में संपत्ति का अधिकार प्राप्त है। उसे किसी से भयभीत होने की जरूरत नहीं है। नारी को आज शर्म और भय छोड़कर घर से बाहर निकलकर काम करने की जरूरत है। नारी को आज स्वावलंबी बनने की आवश्यकता है जिससे उसके अन्दर भी आत्मविश्वास आ सके।

दहेज प्रथा, कन्या भूण हत्या, बाल विवाह अशिक्षा, अनाचार की शिकार महिलाएं ही होती है। इन कुरीतियों के कारण एक लड़की जन्म से ही बोझ समझी जाती हैं। अफगानिस्तान में तालिबानों ने अपना हुक्म चलाया तो महिलाओं की शिक्षा और फैशन पर ही पाबंदी लगी दी। मुस्लिमों ने महिलाओं को बुर्खा में रखा तो कहीं अपने आत्म सम्मान की रक्षा में महिलाओं ने जौहर किए तो वहीं सतीप्रथा भी महिलाओं पर ही कहर बनकर उनके प्राणों पर टूटे।

महिलाओं पर हो रहे इन आपराधिक गतिविधियों का जिम्मेदार मैं कहीं न कहीं हमारे समाज को मानती हूँ हमारे समाज एवं हम लोगों की कमजोरी के कारण हमारी चुप्पी के कारण ही कुछ असामाजिक तत्वों को इतना साहस मिल जाता है। कि वो दिन के समय में भी अपनी कुकृत्यों को अंजाम देने से पीछे नहीं हटते। वहीं दूसरी तरफ हम सब देखते हुए भी न देखने का ढोंग कर अपनी ही रफ्तार में आगे बढ़ जाते हैं।

आज आवश्यकता है कि नारी के साथ अमानुविक व्यवहार बंद हो। पुरूषवर्ग की मनोवृत्ति में परिवर्तन आए, हमारे देश की कानून व्यवस्था में सुधार हो । ऐसे असमाजिक तत्वों को कड़ी सजा दी जाए। नारी को भी पुरुषों के समान स्वतंत्रता पूर्वक जीवन जीने का अधिकार मिले।

– तृष्णा नायर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

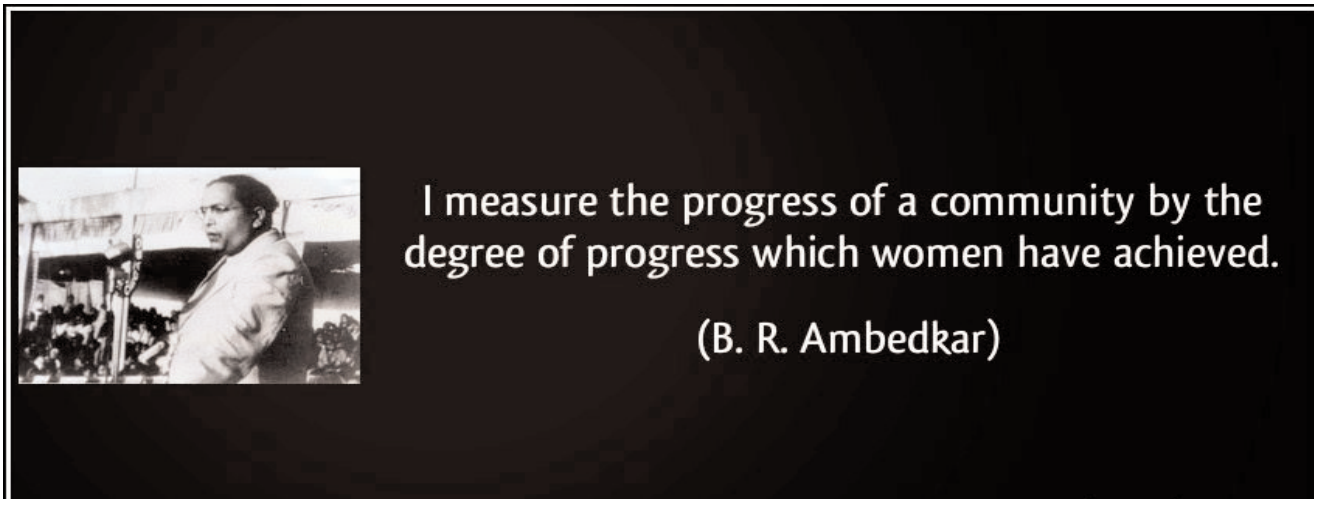

शिक्षा और युवावर्ग

नेहा साहू
बीएसी तृतीय (बायो)

''शिक्षा '' अर्थात ज्ञान। शिक्षा मानव व पशुओं के मध्य वह महीन रेखा है जो मनुष्य को मनुष्य होने का गौरव प्रदान करती है। शिक्षा मानव को मानवता सिखाती है एवं जीवन जीने के सलीके सिखाती है। ''शिक्षा'' मानव समाज को सनातन इतिहास के माध्यम से वर्तमान और भविष्य तक पहुंचाने का एकमात्र साधन है। शिक्षा वह साधन है, है, जो मानव के भीतर शक्तियों का संचार करती है, तथा उन व्यक्तित्वों का विकास करती है, जो हमें समाज, राष्ट्र और परिवार के प्रति अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों के लिये सजग करती है।

भारत में आदि काल से ही शिक्षा की समुचित व्यवस्था रही है। प्रत्येक ग्राम में गुरुकुल के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जाता था। एक जानकारी के आधार पर लगभग 7 लाख 35 हजार गुरुकुल थे, और लगभग इतने ही ग्राम थे। इस प्रकार एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज की रचना होती थी।

परंतु कालान्तर में अंग्रेजों ने इस व्यवस्था को छिन्न भिन्न कर दिया और अपने आवश्यकतानुसार एक खोखली और अधूरी सी शिक्षा प्रणाली को लागू किया जो दुर्भाग्यवश आज भी वही शिक्षा प्रणाली प्रचलित है। युवा वर्ग के प्रति हमारी, समाज की, और राष्ट्र की जो अपेक्षायें है वों कहीं न कहीं इस प्रणाली में अनुपस्थित हैं। कहीं न कहीं वर्तमान शिक्षा भी युवाओं में नैतिक मूल्यों, सदाचारों के विकास में अवरोधक हैं।

शिक्षा के माध्यम से युवा सर्वप्रथम अपने परिवार, फिर समाज तत्पश्चात राष्ट्र की कार्य प्रणाली को समझता है। तदानुसार वह कई सोपानों में उन्नति की ओर बढ़ता है। एक युवा का विकास ही किसी समाज या राष्ट्र के विकास का मापदंड होता है। युवा वर्ग समाज तथा राष्ट्र के आधार स्तम्भ है। उनकी उन्नति से सम्पूर्ण राष्ट्र की उन्नति संभव हैं।

''शिक्षा'' ही युवावर्ग को संस्कारवान तथा विवेकशील बनाती है। शिक्षित युवा अनुशासन प्रिय होता है। शिक्षा विद्यार्थी के भीतर नैतिक मूल्यों का भी सृजन करती है, और जब तक वे शिक्षित नहीं होंगे, नैतिकता तथा अनैतिकता में भेद नहीं कर पायेंगे। प्राचीन काल में शिक्षा नैतिक मूल्यों पर ही आधारित थी, परंतु आज के युवावर्ग में जो नैतिक अवमूल्यन हुआ है, उससे सभी की क्षति हो रही है। युवा वर्ग संस्कारों तथा संस्कृति के प्रतिमानों को दिन प्रतिदिन भूलता जा रहा है जो समाज व राष्ट्र के लिये क्षति का प्रतीक है।

शिक्षा पद्धति केवल सैद्धांतिक शिक्षा तक सीमित न हो अपितु वह कौशल विकास एवं रोजगारपरक भी हो । पूर्व में अंग्रेजों द्वारा जिस शिक्षा पद्धति को लागू किया गया, वह केवल कर्मचारी पैदा करने वाली थी। वर्तमान स्थिति में भी शिक्षा व्यवसाय ही नजर आती है, यह एक बड़ी बिडम्बना है। अधिकतर युवा वर्ग सुशिक्षति होने पर भी शासन के आगे नौकरी के लिए खड़े नजर आते हैं। उन्हें अपने में इतना सक्षम चाहिए कि स्वरोजगार के माध्यम से 25-50 लोगों को भी रोजगार प्रदान कर सकें।

वर्तमान काल में शिक्षा संस्थानों पर होने वाले व्यय में शासन लगातार कटौती कर रहा है, और निजी संस्थानों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस प्रकार शिक्षा का व्यावसायीकरण शिक्षा प्रणाली के विकास में बाधा बन गयी है।

अतः शिक्षा प्रणाली पाठ्यक्रमों, और शिक्षकों के विषय में बनी नीतियों के स्वरूप में आमूल-चूल परिवर्तन आवश्यक है। आज समाज व राष्ट्र में बिखरे हुए ऊर्जा स्त्रोतों स्वरूप युवाओं को संगठित कर शनैः शनैः यह परिवर्तन लाया जा सकता है। तत्पश्चात ही समाज और राष्ट्र प्रगति और शांति के पथ पर पूर्ण नैतिकता सहित अग्रसर होगा, और आदर्श भारत का सपना साकार होगा।

---0---

सर्जना के अभिप्रेरण

ईमानदारी एवं सच्चाई

प्रो. डी. सी. अग्रवाल
विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र

आज का युवा तरक्की चाहता है, प्रगति चाहता है और अन्ततः जीवन में सफल होना चाहता है। इस सफलता की प्राप्त कैसी होगी? यह कम युवाओं को मालूम होता है। सफलता का लघुतम रास्ता बड़ा आसान लगता है लेकिन उससे मिली सफलता का स्वाद मीठा नहीं होता। मैं एक छोटी सी संकलित कहानी के माध्यम से बताना चाहूंगा कि किस तरह एक अति साधारण सी लड़की अपनी ईमानदारी एवं सच्चाई से महलों की रानी बन गई। यदि प्रत्येक ईमानदारी एवं सच्चाई जैसे दो पहियों को अपने जीवन की धुरी बना ले तो आसानी से सफलता जैसी मंजिल पायी जा सकती है।

पुरानी बात है चीन के राजकुमार का राज्याभिषेक होने वाला था। प्रथा अनुसार राजकुमार को विवाहित होना आवश्यक था। इस हेतु राजकुमार को एक पत्नी का चुनाव करना था। जो भावी महारानी हो सके। इसके लिए राज्य की युवतियों को बुलाने के लिए एक समारोह आयोजित करने का निश्चय किया गया ताकि योग्य स्त्री का चुनाव हो सके। एक वृद्ध महिला जो वर्षो से राजमहल में कार्य कर रही थी, उसने जब इस समारोह के बारे सुना तो उसे बहुत दुख हुआ क्योंकि उसकी एकमात्र पुत्री राजकुमार को प्रेम करती थी और उससे विवाह करना चाहती थी। वृद्ध महिला ने घर पहुंचकर उस समारोह के बारे में अपनी पुत्री को बहुत उदास मन से बताया लेकिन उसकी बेटी पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने फैसला किया कि वह भी उस समारोह में जायेगी। उसकी वृद्ध माँ ने समझाया कि वहाँ बहुत धनी एवं सुंदर लड़कियां होगी। ऐसी स्थिति में तुम्हारा वहां जाना उचित नहीं होगा। बेटी ने कहा मैं जानती हूँ। उन सब स्त्रियों के बीच मेरा चुनाव लगभग असंभव है किन्तु इस अवसर का लाभ तो मुझे अवश्य मिलेगा कि मैं राजकुमार को बहुत करीब से देख सकूंगी ओर कुछ उनके साथ समय भी गुजार सकूंगी।

निश्चित समय पर वह राजमहल पहुँची। समारोह शुरू हुआ। एक से एक लड़कियां वहां उपस्थित थी। स्वयं राजकुमार के लिए निश्चित करना कठिन था कि भावी महारानी के रूप में किसका चनाव करे। राजकुमार ने एक चुनौती का ऐलाना किया उसने सभी से कहा कि मैं आप सबको एक-एक फूल का बीज देता हूं। छः माह बाद जो सबसे बढ़िया और सुंदर फूल लेकर आयेगी वह इस देश की महारानी बनेगी। उस लड़की ने भी फूल का एक बीज लिया और घर के एक गमले में उसे बो दिया। उसे बागवानी का ज्ञान नहीं था। उसने गमले की मिट्टी को बहुत धैर्य एवं कोमलता से तैयार किया। तीन महीने जतन करते हुए बीत गए। गमले में कुछ भी अंकुरित नहीं हुआ उसने सभी प्रयत्न किये उसने मालियों एवं जानकारों से भी मशवरा लिया किंतु कोई फायदा नहीं हुआ। उसे लगा प्रतिदिन उसका सपना उससे दूर होता जा रहा है। हालांकि उसका प्रेम सदा की भांति अब भी जीवन्त था।

आखिरकार 6 माह बीत गये। उसके गमले में कुछ भी नहीं लगा। उसके पास राजकुमार को दिखाने के लिए कुछ भी नहीं था। लेकिन उसे पता था उसने पूरी ईमानदारी मेहनत एवं निष्ठा से अपना काम किया था। उसे यह भी पता था कि अब राजकुमार से उसकी अंतिम मुलाकात ही होगी किन्तु वो उस खाली गमले के साथ राजकुमार से मिलने का अवसर नहीं खोना चाहती थी। मिलने का दिन आया। वह लड़की अपने बिना पौधे वाले गमले के साथ राजमहल पहुंची। उसने देखा कि उसके अलावा सभी एक से बढ़कर एक सुंदर फूल गमले में लेकर आये हैं। आखिरकार वह क्षण आया जब राजकुमार ने आकर प्रत्येक गमले को बड़े ध्यान से देखा और अंत में राजकुमार ने घोषणा करते हुए उस नौकरानी की लड़की को अपनी पत्नी के रूप में चुना। सबने इसका विरोध किया। राजकुमार ने अपने इस निर्णय के पक्ष में तर्क देते हुए कहा कि इस लड़की ने ही ऐसा फूल उगाया है जो इसे महारानी बनने योग्य बनाता है। ईमानदारी एवं सच्चाई के फूल इसने पैदा किये है क्योंकि मैंने जो बीच आप सबको दिये थे वे बेकार थे उससे कुछ भी पैदा नहीं हो सकता था। सभी बीज उबले हुए थे। उनसे फूल क्या वे तो अंकुरित भी नहीं हो सकते थे लेकिन इसमें ईमानदारी एवं सच्चाई का पौधा जिसने उगाया है उसे उसका फल अवश्य मिलेगा।

दरअसल धैर्य, लगन, कर्त्तव्य, निष्ठा एवं ईमानदारी ही एक सफल व्यक्तित्व का निर्माण करती है। यह पथ सख्त रूक्ष या कंटकित भले हो पर सफलता मिलना असंदिग्ध है। सत्य एवं परिश्रम के रास्ते पर अभ्यास की महती आवश्यकता पड़ती है। एक बार अभ्यास बन जाने पर विचलन का डर समाप्त हो जाता है और लक्ष्य से पूर्व रास्ता भी आनंद दायक लगने लगता है।

आदि-रंग कार्यशाला

डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी

आदि-रंग
लोक/जनजातीय चित्रकारी प्रशिक्षण की सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

रजा फाउंडेशन एवं शासकीय डॉ. वामन वासुदेव पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग के संयुक्त तत्वाधान में चित्रकला विभाग ने लोक/ जन जातीय चित्रकारी प्रशिक्षण सात दिवसीय ''आदि रंग'' राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला की नींव 2014 के आदि बिम्ब कार्यशाला का समापन के वक्त ही पड़ी थी जब यह तय किया गया कि अगली कार्यशाला को और बेहतर स्वरूप दिया जाएगा।

महान चित्रकार लियानार्डो द विंची कहते हैं कि चित्रों में मन या चित्त के सबसे पवित्र भाव रचे जाते हैं इसीलिए सामान्य से सामान्य चित्र भी हमारे मन को आकर्षित करते हैं जैसे कोई अबोध बालक अपने निश्छल पवित्र भावों के कारण मुग्ध करता है।

कदाचित् चित्र शब्द की उत्पत्ति भी चित्त से ही हुई हो। 4 तारीख को प्रो. माण्डवी सिंह, कुलपति इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ की गरिमामयी उपस्थिति में इस कार्यशाला का उद्घाटन हुआ। इस कार्यशाला का उदेश्य छात्राओं एवं प्रतियोगियों को अपनी लोक परंपरा के जीवन्त चित्र शैलियों से परिचित कराना व प्रशिक्षकों के रूप में बिहार से मैथिली पेंटिंग लोक चित्रकार श्रवण पासवान मध्यप्रदेश के मंगरू गोंड़ पेंटिंग श्री रमेश बारिया भील पेंटिंग गुजरात से जगदीश जी गुजराती कलमकारी, हरसिंह राठवा एवं राकेश राठवा, पिथौरा पेंटिंग तथा अम्बिकापुर (छ.ग.) से साफियानो तथा उनके पुत्र बज्जू जी गोंदना पेंटिंग के ख्यात कलाकार उपस्थित हुए। पिछले छः दिनों से पंडाल सृजन केन्द्र रहा। इसीलिए अगर उक्त स्थान को सृजन भूमि कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। छः दिनों से पंडाल में चारों तरफ कैनवास या पेपर पर रंग ढुलक रहे थे। और कैनवास पर रंग चढ़ने के साथ ही चेहरे सृजन की आभा से दमक रहे थे। सुधी प्रतिभागियों में नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी रायपुर, दिल्ली विश्वविद्यालय भिलाई महाविद्यालय, रूंगटा कॉलेज, साँई महाविद्यालय, खालसा पब्लिक स्कूल, डीपीएस भिलाई, डीपीएस दुर्ग, सेंट जेवियर्स स्कूल और शासकीय गर्ल्स कॉलेज के प्राध्यापक एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता कर इस कार्यशाला को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

इनके अतिरिक्त पैरों से विविध चित्र बनाते दिव्यांग कलाकार गौकरण पाटिल, बच्चों को चित्रकला सीखाने वाली डॉ. निवेदिता वर्मा, श्रीमती रोहिणी पाटणकर भिलाई नगर निगम आयुक्त की अर्द्धांगनी श्रीमती सुन्दरानी जैसे अनेक सुरूचि संपन्न कला प्रशिक्षुओं न लगन पूर्वक लोक चित्रों की बारीकियाँ सीखी। चित्रकला के प्रति दिवानगी तन्मयता की इससे बड़ी मिसाल क्या हो सकती है। आज के युवा अपने सबसे करीबी स्मार्टफोन की भी सुधि भूल जाए।

यह कार्यशाला इस बात की भी साक्षी है कि वाई-फाई की पूरी सुविधा उपलब्ध होते हुए भी किसी को इस प्रांगड़ में स्मार्टफोन का इस्तेमाल करते नहीं देखा गया।

सभ्यता के प्रारंभ से ही चित्रकार प्रकृति के साहचर्य को प्रमुखता देता रहा है। इन लोक चित्र शैलियों में भी प्रकृति का सर्वाधिक महत्व दिखता है। अपने विविध रूपों में भिन्न शैलियों में प्रकृति ही अभिव्यक्त हो रही है। माता का परदा बनाने में प्राकृतिक रंगो एवं पारम्परिक तरीकों का इस्तेमाल करने वाले जगदीश भाई ने अपनी व्यथा व्यक्त की कि परदे में रंग नदियों के प्रवाहित स्वच्छ जल से ही चढ़ता है लेकिन आज नदियों का जल तक प्रदूषित हो गया है। ऐसी कार्यशाला युवा पीढ़ी में अपनी परंपरा और संस्कृति के साथ-साथ प्रकृति के प्रति स्नेह एवं संवेदना को पुनःप्रतिष्ठित करती है। ये प्रकृति से कोमलता और अनिवार्यता के प्रति जागरुकता भी जगाते हैं। तुलसी ने मानस में भक्ति के बारे में कहा है कि -

जाकी रही भावना जैसी हरि मूरति देखी तिन तैसी

ये पंक्तियां इन चित्रकलाओं के संबंध में भी उतनी ही सत्य हैं। कलाकारों उनके चित्रों पार्श्व संगीत एवं प्रशिक्षुओं संयोजन से ऐसा कलात्मक वातावरण तैयार हुआ कि इस कार्यशाला में केवल और केवल सृजन हुआ। और सृजन ही इस कार्यशाला का उत्स है। महाविद्यालय के चित्रकला विभाग द्वारा ''माटी शिल्प'' कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के प्रशिक्षकों द्वारा छात्राओं को इको फ्रेंडली गणेश प्रतिमाएँ बनाने का दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया ।

IQAC

डॉ. अमिता सहगल
संयोजक (आईक्यूएसी)

महाविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) की स्थापना 5 नवम्बर 2012 को की गई जिसका मूल उद्देश्य छात्राओं एवं महाविद्यालय के निरंतर विकास हेतु विभिन्न गतिविधियाँ संचालित करना है। इसके अंतर्गत परीक्षा परिणामों को सुधारने शिक्षण को बेहतर बनाने हेतु नवीन तकनीकों का प्रयोग, अनुसंधान को बढ़ाना, आधारभूत सुविधाओं का विकास महाविद्यालय के अन्य स्त्रोतों का प्रबंधन आदि शामिल है। सत्र 2017-18 में महाविद्यालय में छात्राओं, प्राध्यापकों एवं महाविद्यालयीन कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है ।

(1) विश्व पर्यावरण दिवस पर ग्रीन ऑडिट कराया गया जिसमें परिसर में वर्तमान हरियाली तथा भविष्य में प्लान्ड वे में ग्रीनरी तथा पेड़ कैसे लगाये जाएं, इसका प्लान तैयार किया गया

(2) छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु तैयार कराने के लिये यहां महाविद्यालय स्तर पर परीक्षा आयोजित की गई। लगभग 256 छात्राओं में से सुपर ट्वेंटी (20) छात्राओं को चयनित कर उन्हें निःशुल्क कोचिंग देने की व्यवस्था महा. द्वारा प्रदान की गई।

(3) छग शासन उच्च शिक्षा विभाग एवं चिप्स द्वारा क्रियान्वित मुख्यमंत्री युवा स्वावलंबन योजना के अंतर्गत सत्र 2016-17 में 17 (hireable) और 81(trainable) तथा 2017-18 में 80(Hireable) तथा 131 (trainable) छात्रायें रहीं। महाविद्यालय की 07 छात्राओं का चयन बहुराष्ट्रीय कंपनी में हुआ।

(4) छात्राओं के कैरियर मार्गदर्शन हेतु ''सुनहरे भविष्य की ओर '' के अंतर्गत इंटरप्रेन्योरशिप की ट्रेनिंग दी गई जिसमें घरेलू उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया तथा Parsonality develòpment व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयामों पर विशेषज्ञों का व्याख्यान कराया गया। विधिक साक्षरता पर प्रतियोगी परीक्षा हुई।

(5) नव प्रवेशित छात्राओं के लिये ''इंडक्शन प्रोग्राम (Induction programme) एवं नव-नियुक्त प्राध्यापकों हेतु ओरिएण्टेशन कार्यक्रम आयोजित किये गये।

(6) इसके साथ ही एक अगस्त से 14 अगस्त तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया।

(7) चित्रकला विभाग द्वारा पेपर मैशे एवं माटी शिल्प पर कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें इकोफ्रेंडली गणपति की प्रतिमा निर्मित की गई। नृत्य विभाग द्वारा देसी डे मनाया गया ।

(8) गृहविज्ञान संगीत जूलॉजी, बॉटनी माइक्रोबायोलॉजी कैमेस्ट्री आदि विभागों द्वारा यूजीसी के माध्यम से National seminor और workshops आयोजित किये गये।

(9) गृह विज्ञान विभाग द्वारा राष्ट्रीय पोषण सप्ताह एवं World diabetic day zoology dept. द्वारा National wild life conservation week मनाया गया। नृत्य विभाग द्वारा communication skill पर दस दिवसीय drama workshop आयोजित किया गया । वाणिज्य विभाग द्वारा tally basic courses पर सात दिवसीय work

shop आयोजित किया गया। चित्रकला विभाग द्वारा सात दिवसीय आदि रंग कार्यशाला आयोजित की गई ।

(10) महाविद्यालयीन छात्राओं ने कस्तूरबा समूह बनाया है जहाँ समाज सेवा की भावना, सहायता व स्वच्छता से संबन्धित संकल्प लिया गया।

(11) Red Crose के तत्वाधान में Medical centre खोला गया जहां प्रति सप्ताह चिकित्सक आते हैं साथ ही इनके द्वारा दंत परीक्षण शिविर भी लगाया गया। साथ ही counselling centre भी खोला गया है।

(12) महाविद्यालय द्वारा वर्ष में दो बार Campus news जैसी विशिष्ट पात्रिका का प्रकाशन किया जाता है।

(13) विभिन्न विभागों जैसे physics, Botony zoology Geography, economics, sociology, political science, PGDCA, Home sc. द्वारा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया।

(14) महाविद्यालय छात्राओं के हित एवं आवश्यकता को ध्यान में रखकर नई योजनाएं लागू की गई जैसे -

0 मोर नोनी योजना

0 छोटी बहन योजना

0 Honesty corner (ईमानदारी का कोना)

0 नेकी की दीवार

0 माता माधवी बालिका शिक्षा सहायता योजना के अन्तर्गत महाराजा अग्रसेन वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा परीक्षा एवं प्रवेश शुल्क दिया जाता है।

0 सरस्वती विद्या योजना

0 साथ ही महाविद्यालयीन प्राध्यापकों द्वारा अपनी personal books donate कर के लाइब्रेरी का संचालन किया जाता है।

0 स्वरोजगार योजना के अंतर्गत खाना खजाना, ब्यूटी पार्लर, रांगोली प्रशिक्षण एवं विशेषरूप से सिटकॉन द्वारा तीन दिवसीय उद्यमिता जागरूकता एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। ''प्रश्न मंच'' प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

0 साथ ही छात्राओं के लिए वैन्डिंग मशीन तथा इन्सीनरेटर मशीन लगाई गई।

0 महाविद्यालय में डिजिटल सूचना पटल भी लगाया गया है।

0 साथ ही समय समय पर छात्राओं को आधुनिक एवं डिजिटल मॉनीटाइजेशन (प्लास्टिक मनी, कैशलेस, GST) संबंधी जानकारी दी गई।

महाविद्यालय में महिलाओं के लिए उद्योग स्थापना हेतु CITCON Chhattigarh Industrial a technical consultancy centre Raipur द्वारा 25 दिवसीय महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रम शुरू हुआ ।

इसके साथ ही feed back forms भराये जाते हैं, जिसमें प्राध्यापकों एवं महाविद्यालय दोनों के बारे में छात्राओं से पूछा जाता है।

इस प्रकार महाविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों एवं व्यक्तित्व विकास, क्रीड़ा, सांस्कृतिक आदि समस्त गतिविधियाँ सुचारू रूप से संचालित होती रहती हैं ।

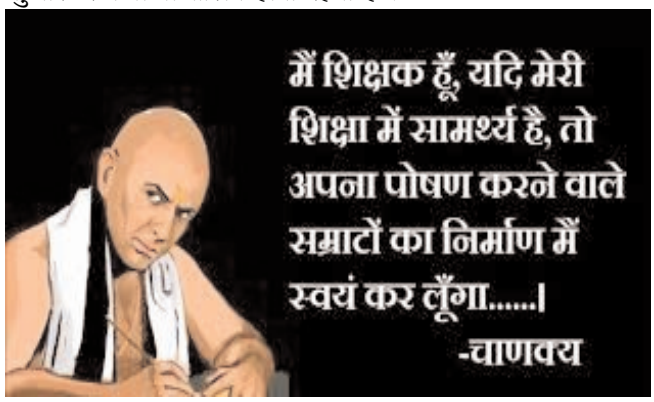

वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

कन्या शिक्षा में अग्रणी संस्थान

शासकीय डॉ.वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

- राष्ट्रीय स्तर के खेलों में 25 छात्राओं का चयन एवं विश्वविद्यालयीन स्तर पर 34 छात्राओं की सहभागिता।
- हैण्डबाल में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु कु. रजनी को शहीद स्व. राजीव पाण्डे खेल अलंकरण पुरस्कार।
- सुपर–20 डॉटर्स योजनांतर्गत 20 छात्राओं को यूपीएससी/पीएससी की तैयारी की जिम्मेदारी।
- 'मोर नोनी' योजनांतर्गत 30 प्राध्यापकों द्वारा 30 छात्राओं को गोद लिया गया। पढ़ाई व मार्गदर्शन का लिया जिम्मा।
- 'छोटी बहन' छात्रवृत्ति योजना : भूतपूर्व छात्राओं के संगठन 'एलुमनी' द्वारा अभिनव पहल।
- अग्रसेन वेलफेयर ट्रस्ट के सौजन्य से 100 छात्राओं को शुल्क प्रदान किया जाता है।
- विश्वविद्यालयीन प्रावीण्य सूची में वर्चस्व, उत्कृष्ट परीक्षाफल।

डॉ. सुशील चन्द्र तिवारी, प्राचार्य, शासकीय डॉ. वा.वा. पाटणकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.) द्वारा प्रकाशित तथा विकल्प विमर्श , रायपुर द्वारा मुद्रित। (केवल आंतरिक वितरण हेतु)